











श्रीमद्-आद्यशङ्करभगवत्पाद-परम्परागत-मूलाम्नाय-सर्वज्ञपीठ-श्री-काञ्ची-कामकोटि-पीठं जगद्गुरु-शङ्कराचार्यस्वामि-श्रीमठसंस्थानम्

श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद-सहस्रनामाविलः श्रीमत्-शङ्कर-भगवत्पाद-सहस्रनामाविलः

- १. श्रीगुरवे नमः
- २. शुद्धहृदयाय नमः
- ३. श्रेयसे नमः
- ४. शान्ताय नमः
- ५. द्यानिधये नमः
- ६. दान्ताय नमः
- ७. तितिक्षवे नमः
- ८. चन्द्राभाय नमः
- ९. न्यस्तकर्मणे नमः
- १०. समाहिताय नमः

- ११. चटुलाय नमः
- १२. यतचित्ताय नमः
- १३. श्रद्धानाय नमः
- १४. चिरन्तनाय नमः
- १५. चापलाय नमः
- १६. चतुरास्येड्याय नमः
- १७. चरितव्रतकोविदाय नमः
- १८. चतुराय नमः
- १९. श्रुतिमौलिस्थाय नमः
- २०. शिवाय नमः
- २१. शुद्धप्रबोधकाय नमः
- २२. विशने नमः
- २३. विश्वेश्वराय नमः
- २४. मुख्याय नमः
- २५. अमूल्याय नमः
- २६. मूलकृते नमः
- २७. मखिने नमः
- २८. मूर्घाभिषिक्ताय नमः
- २९. सर्वेशाय नमः
- ३०. महादेवाय नमः
- ३१. मदामदाय नमः
- ३२. भवाय नमः
- ३३. रुद्राय नमः
- ३४. हराय नमः

- ३५. मुग्धाय नमः
- ३६. शर्वाय नमः
- ३७. ईशानाय नमः
- ३८. ईश्वराय नमः
- ३९. महेशाय नमः
- ४०. स्वस्तिकृते नमः
- ४१. सुस्थाय नमः
- ४२. स्थिराय नमः
- ४३. स्थाणवे नमः
- ४४. सुरार्चिताय नमः
- ४५. शाश्वताय नमः
- ४६. सोम्यवदनाय नमः
- ४७. सिद्धयोगिनिषेविताय नमः
- ४८. सोमाय नमः
- ४९. सुधास्वच्छतनवे नमः
- ५०. श्रीमते नमः
- ५१. प्रेयसे नमः
- ५२. जगत्पतये नमः
- ५३. श्रीकण्ठाय नमः
- ५४. श्रितवात्सल्याय नमः
- ५५. शाम्भवाय नमः
- ५६. राङ्कराभिधाय नमः
- ५७. वीराय नमः
- ५८. शुभविहारिणे नमः

- ५९. शुद्धब्रह्मेक्यमूर्तिमते नमः
- ६०. अखिलाय नमः
- ६१. अखिलऋग्गम्याय नमः
- ६२. भूतात्मने नमः
- ६३. भूतकृते नमः
- ६४. विभवे नमः
- ६५. आज्ञाकृते नमः
- ६६. अमरोद्योगिने नमः
- ६७. कलिभीतसुरार्थिताय नमः
- ६८. गुहादेशिने नमः
- ६९. गुहागेहिने नमः
- ७०. विष्णुब्रह्मनिदेशकृते नमः
- ७१. गुह्याय नमः
- ७२. गुहाशयाय नमः
- ७३. गूढाय नमः
- ७४. भूरिदाय नमः
- ७५. भूतिकृते नमः
- ७६. बुधाय नमः
- ७७. भूभृत्स्थाय नमः
- ७८. भूतिभृते नमः
- ७९. भूभुजे नमः
- ८०. भूतेशाय नमः
- ८१. भूतभावनाय नमः
- ८२. भद्राय नमः

- ८३. भव्याय नमः
- ८४. भवभिषजे नमः
- ८५. भक्तपूज्याय नमः
- ८६. पिनाकभृते नमः
- ८७. मण्डलात्मने नमः
- ८८. मधुरवाचे नमः
- ८९. स्मिताय नमः
- ९०. मान्याय नमः
- ९१. मधवे नमः
- ९२. मुनये नमः
- ९३. महातेजसे नमः
- ९४. महितवाचे नमः
- ९५. अलङ्काराय नमः
- ९६. अमलाय नमः
- ९७. अनघाय नमः
- ९८. बालाय नमः
- ९९. अबलेषणामुक्ताय नमः
- १००. आर्यभुवे नमः
- १०१. आर्यसंश्रयाय नमः
- १०२. शीलिने नमः
- १०३. शिवगुरुप्रेष्ठाय नमः
- १०४. आर्याम्बासुप्रजायै नमः
- १०५. शिवाय नमः
- १०६. परात्पराय नमः

- १०७. त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवसुसन्नुताय नमः
- १०८. उदारिधये नमः
- १०९. सत्यरूपाय नमः
- ११०. कालटीजननाय नमः
- १११. अद्वयाय नमः
- ११२. विद्यापतये नमः
- ११३. वटवे नमः
- ११४. वेद्याय नमः
- ११५. चिन्मयाय नमः
- ११६. चूर्णिकाप्रियाय नमः
- ११७. श्रीमात्रर्थितगार्हस्थाय नमः
- ११८. श्रेयोधिये नमः
- ११९. श्रितदेशिकाय नमः
- १२०. श्रीमुखाय नमः
- १२१. श्रीधराय नमः
- १२२. शुष्मिणे नमः
- १२३. शासित्रे नमः
- १२४. शुचये नमः
- १२५. उज्ज्वलाय नमः
- १२६. साधवे नमः
- १२७. स्थेयसे नमः
- १२८. संयियंसवे नमः
- १२९. सरिदाप्नुतविग्रहाय नमः
- १३०. ग्राहग्रहव्याजलब्धप्रसूसन्याससम्मतये नमः

- १३१. सन्न्यस्ताय नमः
- १३२. संयमिने नमः
- १३३. प्रैषिणे नमः
- १३४. संसारत्यागतत्पराय नमः
- १३५. अर्चिष्मते नमः
- १३६. आत्तगोविन्दाय नमः
- १३७. प्रस्थिताय नमः
- १३८. प्राप्तसद्गुरवे नमः
- १३९. आमोदिने नमः
- १४०. निगमान्तज्ञाय नमः
- १४१. एकानन्द्रसात्मकाय नमः
- १४२. श्रीब्रह्मसूत्रव्याख्यात्रे नमः
- १४३. एकदण्डाय नमः
- १४४. कषायभृते नमः
- १४५. भक्तप्रपञ्चसच्छात्राय नमः
- १४६. गोविन्द्भगवत्प्रियाय नमः
- १४७. हरिसब्रह्मचारिणे नमः
- १४८. स्पृष्टगौडपदाम्बुजाय नमः
- १४९. मातङ्गश्रीमहादेवीयोक्तिस्थापितसन्मताय नमः
- १५०. यतितीर्थादिपुर्यन्तसम्प्रदायप्रवर्तकाय नमः
- १५१. बादरायणवाग्वादिने नमः
- १५२. बहुशिष्यपरीवृताय नमः
- १५३. पद्मपादसनाथाय नमः
- १५४. योगप्राप्तहराचलाय नमः

- १५५. आनीतलिङ्गकुलकाय नमः
- १५६. आनन्दलहरीग्रहाय नमः
- १५७. केदारेशप्रतिष्ठात्रे नमः
- १५८. नेपालवरलिङ्गकृते नमः
- १५९. काश्मीरादिक्षेत्रवासिने नमः
- १६०. दुर्वादिमतखण्डनाय नमः
- १६१. श्रीहस्तिगिरिनाथादिदिव्यक्षेत्रचराय नमः
- १६२. सुधिये नमः
- १६३. रुद्धभट्टोक्तिराद्धान्ताय नमः
- १६४. जितमण्डनभारतये नमः
- १६५. परकायप्रवेशाप्तपाञ्चशर्यमहागमाय नमः
- १६६. गुहानृसिंहसंस्तावलब्धदग्धकराम्बुजाय नमः
- १६७. सरस्वतीजयाध्मातयतीश्वरसुरेश्वराय नमः
- १६८. हस्तामलकसेव्याङ्मये नमः
- १६९. तोटकार्यसुसेविताय नमः
- १७०. चित्सुखोदङ्कसच्छात्रवन्दिताङ्मये नमः
- १७१. गुणाम्बुधये नमः
- १७२. इच्छालब्यगिरीशात्मने नमः
- १७३. गौरीकान्ताय नमः
- १७४. गुरूत्तमाय नमः
- १७५. गुरुराजाय नमः
- १७६. गुणिने नमः
- १७७. गोम्रे नमः
- १७८. गोपनाय नमः

- १७९. नराकृतये नमः
- १८०. निर्ममाय नमः
- १८१. नरकारातये नमः
- १८२. नम्याय नमः
- १८३. नाथाय नमः
- १८४. निरञ्जनाय नमः
- १८५. निस्स्पृहाय नमः
- १८६. निष्कलाय नमः
- १८७. नित्याय नमः
- १८८. नामरूपविवेकवते नमः
- १८९. नालीकाय नमः
- १९०. निष्क्रियाय नमः
- १९१. नीरुजे नमः
- १९२. निराशिषे नमः
- १९३. निरामयाय नमः
- १९४. निर्नतये नमः
- १९५. निःस्वधाकाराय नमः
- १९६. निःस्वाहाकृते नमः
- १९७. निरीश्वराय नमः
- १९८. नीरूपकाय नमः
- १९९. निर्गुणाय नमः
- २००. निष्कर्मणे नमः
- २०१. निर्व्यथाय नमः
- २०२. विशने नमः

- २०३. निर्लेपाय नमः
- २०४. नित्यपुष्टाय नमः
- २०५. हृष्टाय नमः
- २०६. तुष्टजनाश्रयाय नमः
- २०७. साक्षात्कारिणे नमः
- २०८. सन्निधानाय नमः
- २०९. सूरये नमः
- २१०. सायङ्गहाय नमः
- २११. यमिने नमः
- २१२. सते नमः
- २१३. सात्वते नमः
- २१४. सात्त्विकाय नमः
- २१५. सभ्याय नमः
- २१६. सर्वमित्राय नमः
- २१७. स्मरान्तकाय नमः
- २१८. सिशष्याय नमः
- २१९. सङ्ग्रहिणे नमः
- २२०. ज्यायसे नमः
- २२१. बलिने नमः
- २२२. वाग्मिने नमः
- २२३. मितोक्तिकृते नमः
- २२४. वाचंयमाय नमः
- २२५. वरिष्ठाय नमः
- २२६. व्याख्यानाख्यायिकापटवे नमः

- २२७. परमाय नमः
- २२८. परिभुवे नमः
- २२९. प्रौढाय नमः
- २३०. प्राज्ञाय नमः
- २३१. प्रीताय नमः
- २३२. प्रियंवदाय नमः
- २३३. प्रातर्दिने नमः
- २३४. दह्रयोगिने नमः
- २३५. प्रह्वाय नमः
- २३६. प्रश्ननिरूपणाय नमः
- २३७. पारङ्गताय नमः
- २३८. पाशमुक्ताय नमः
- २३९. परविदे नमः
- २४०. प्रत्यगीक्षित्रे नमः
- २४१. अधिष्ठानविदे नमः
- २४२. अव्याजाय नमः
- २४३. एकवादिने नमः
- २४४. द्वयासहाय नमः
- २४५. स्वभुवे नमः
- २४६. स्वराजे नमः
- २४७. विराजे नमः
- २४८. मौनिने नमः
- २४९. स्वप्रकाशाय नमः
- २५०. स्वयम्प्रभवे नमः

२५१. महते नमः

२५२. अरूपाय नमः

२५३. अव्यक्ताय नमः

२५४. परस्मै ज्योतिषे नमः

२५५. परस्मे पदाय नमः

२५६. परस्मै धाम्ने नमः

२५७. परस्यै काष्टायै नमः

२५८. परस्यै शक्त्ये नमः

२५९. परस्ये गत्ये नमः

२६०. परस्मे ओकसे नमः

२६१. परस्मे वस्तुने नमः

२६२. परस्मे ब्रह्मणे नमः

२६३. परस्मै पुरो नमः

२६४. परायणाय नमः

२६५. परस्मै भावाय नमः

२६६. प्रशान्तात्मने नमः

२६७. प्रसादकाय नमः

२६८. प्रज्ञानघनमूर्तये नमः

२६९. प्रशास्त्रे नमः

२७०. प्रत्यगर्थवते नमः

२७१. विज्ञात्रे नमः

२७२. विश्वकृते नमः

२७३. वेधसे नमः

२७४. वेदवेद्यस्ववैभवाय नमः

२७५. सत्यव्रताय नमः

२७६. सत्यपराय नमः

२७७. त्रिसत्याय नमः

२७८. सत्यनायकाय नमः

२७९. सत्यप्रतिष्ठाय नमः

२८०. सत्याशिषे नमः

<mark>२८१. सत्यार्थप्रेरकाय नमः</mark>

२८२. समाय नमः

२८३. ईक्षित्रे नमः

२८४. सिचदानन्दस्वरूपाय नमः

२८५. सद्सत्पराय नमः

२८६. सत्यरूपाय नमः

२८७. सत्यसंस्थाय नमः

२८८. नगेशाय नमः

२८९. छात्रमानिताय नमः

२९०. नारदादिनुताय नमः

२९१. नम्राय नमः

२९२. नारीनरनवाकृतये नमः

२९३. व्यासजैमिनिवाग्वादिने नमः

२९४. शारदाविजयिने नमः

२९५. शमिने नमः

२९६. सुरेश्वराचार्यदत्तस्वाश्रमाय नमः

२९७. सूरिकेसरिणे नमः

२९८. अङ्कितादिवात्यकृत्यदूरवैदिकवर्त्मकृते नमः

- २९९. कुकूलानलकूटस्थकुमारिलकृतानतये नमः
- ३००. कुतर्ककर्कशक्ष्माभृत्कुलिशाय नमः
- ३०१. कविकेसरिणे नमः
- ३०२. कुवादिमदमत्तेभपश्चास्याय नमः
- ३०३. कलिनाशनाय नमः
- ३०४. योगरोगहराय नमः
- ३०५. साह्यसङ्खावते नमः
- ३०६. अमितद्युतये नमः
- ३०७. जितजैनप्रतिष्टम्भस्तम्भनोच्चाटनामनवे नमः
- ३०८. वैशेषिकविशेषोक्तिविशोषणविचक्षणाय नमः
- ३०९. निरस्तद्वैतिमूर्धन्यशैवभागवतागमाय नमः
- ३१०. काञ्चीनगरनिर्मातृराजसेननृपार्चिताय नमः
- ३११. वरदालयनिर्मात्रे नमः
- <mark>३१२. एकाम्रनाथपदोद्धराय नमः</mark>
- ३१३. गुहास्थचित्कलाचाण्ड्यखण्डनाय नमः
- ३१४. कालखण्डनाय नमः
- ३१५. कामकोष्ठधराक्रीडाय नमः
- ३१६. कामकोटिपदाश्रयाय नमः
- ३१७. कामाक्षीवरिवस्याकृते नमः
- ३१८. कालहस्तीश्वरार्चनाय नमः
- ३१९. क्रुप्तसोपानसुप्रापशेषाचलशिरःपदाय नमः
- ३२०. दिव्याय नमः
- ३२१. दीव्यद्वह्मवर्चसे नमः
- ३२२. दीनरक्षिणे नमः

- ३२३. द्रापहाय नमः
- ३२४. देवदेवाय नमः
- ३२५. दीनबन्धवे नमः
- ३२६. द्यिताय नमः
- ३२७. दीनदैन्यहते नमः
- ३२८. दोषदूराय नमः
- ३२९. दुष्टरिपवे नमः
- ३३०. दुर्वासःश्लाघिताय नमः
- ३३१. अदराय नमः
- ३३२. द्रविणाद्येषणात्यागिने नमः
- ३३३. दोषज्ञाय नमः
- ३३४. दूरदर्शनाय नमः
- ३३५. दीर्घदर्शिने नमः
- ३३६. दौःस्थ्यदूराय नमः
- ३३७. दारिद्रयदमनाय नमः
- ३३८. दियने नमः
- ३३९. दिलताशेषधीदोषाय नमः
- ३४०. विस्तृताद्वेतवैभवाय नमः
- ३४१. क्षेत्राटनकमभ्रान्तकृत्स्रभारतमण्डलाय नमः
- ३४२. कैलाससेविने नमः
- ३४३. बदरीनारायणपदाश्रयाय नमः
- ३४४. कामरूपार्चनाय नमः
- ३४५. अकामाय नमः
- ३४६. काश्मीरेश्वरसेवकाय नमः

- ३४७. अवन्तीद्वारकायोध्यामायाकाञ्चीमहीप्रियाय नमः
- ३४८. कालीघट्टहरिद्वारजम्बुदेवीप्रयागगाय नमः
- ३४९. श्रीशैलेशजगन्नाथपुरुषोत्तमभीमगाय नमः
- ३५०. त्र्यम्बकोज्जयिनीविन्ध्यवासिनीसेवनापराय नमः
- ३५१. सेतुकन्याकुमारीगाय नमः
- ३५२. जनार्दनजनार्तिघ्ने नमः
- ३५३. अनन्तपुरवैयाघ्रवृषाचलपदाश्रयाय नमः
- ३५४. कालटीकलभाय नमः
- ३५५. कल्याय नमः
- ३५६. सरःशरझरीचराय नमः
- ३५७. कृत्स्नकर्णाटपाण्ड्यान्ध्रचेरचोलमहीचराय नमः
- ३५८. श्रीनीपतिल्वन्यग्रोधछायाश्वेतवनाश्रयाय नमः
- ३५९. मान्यश्रीरङ्गमधुरार्जुनशायिपुराश्रयाय नमः
- ३६०. अखिलाण्डेश्वरीरत्नताटङ्कन्यस्तयन्त्रराजे नमः
- ३६१. काञ्चीगुहाच्छद्न्यस्तचकराजपरिस्तराय नमः
- ३६२. भूम्यप्तेजोनिलाकाशालिङ्गसेवाधृतादराय नमः
- ३६३. सत्यव्रतस्थलस्थायिने नमः
- ३६४. कामकोटिमठास्पदाय नमः
- ३६५. चिदम्बरसभान्यस्तमोक्षलिङ्गाय नमः
- ३६६. अलिङ्गकाय नमः
- ३६७. ऋश्यशृङ्गाश्रमन्यस्तभोगलिङ्गाय नमः
- ३६८. ऋतम्भरिणे नमः
- ३६९. शारदामान्यसन्देशाय नमः
- ३७०. सर्वज्ञाय नमः

- ३७१. सर्वपापनुदे नमः
- ३७२. शारदामठसङ्कप्तशारदापीठपावनाय नमः
- ३७३. शारदास्थापनापूतऋश्यशङ्गगिरिस्थलाय नमः
- ३७४. अशरीरवचोव्यूढकामकोटिमठस्थितये नमः
- ३७५. कामकोटिमहापीठमध्यदृश्यमहामणये नमः
- ३७६. कालघ्वाय नमः
- ३७७. कामदुहे नमः
- ३७८. कान्ताय नमः
- ३७९. शारदाजैत्रवाङ्मुखाय नमः
- ३८०. कामकोटिधरागोष्ठिने नमः
- ३८१. कर्मन्दिकुलशेखराय नमः
- ३८२. शिष्यसङ्घपरज्ञानव्रततीदोहदप्रदाय नमः
- ३८३. मठाम्नायमहाम्नायसेतुकेरलधर्मकृते नमः
- ३८४. पुर्यन्ततीर्थप्रमुखिशष्यागमविवेचनाय नमः
- ३८५. आनन्देन्द्राभिधापूर्वसरस्वत्याह्वयागमाय नमः
- ३८६. आनन्दमयजानन्दिवाग्जयख्यातवाक्पदाय नमः
- ३८७. योगेश्वरार्चानिरताय नमः
- ३८८. योग्याय नमः
- ३८९. योगविदां वराय नमः
- ३९०. सुस्थिताय नमः
- ३९१. सुस्थिराय नमः
- ३९२. स्निग्धाय नमः
- ३९३. स्थास्त्रवे नमः

३९४. स्थेम्ने नमः

३९५. स्थितिप्रदाय नमः

३९६. सत्यव्रतपद्रप्राप्तब्रह्मीभावाय नमः

३९७. अशरीरवते नमः

३९८. दुस्तरापारसंसारपारतारणकृत्तरये नमः

३९९. कृत्तारिवर्गसंशान्तस्वान्तलक्ष्यस्ववैभवाय नमः

४००. अनातुराय नमः

४०१. अतुलिताय नमः

४०२. सद्वृत्ताय नमः

४०३. साधुदर्शनाय नमः

४०४. षड्रर्शनीपारदृश्वने नमः

४०५. षडध्वातीतमानसाय नमः

४०६. अदोषाय नमः

४०७. दुर्जयाय नमः

४०८. अदूनाय नमः

४०९. दुर्घर्षाय नमः

४१०. अपुनर्भवाय नमः

४११. शुद्धाय नमः

४१२. बुद्धाय नमः

४१३. प्रबुद्धात्मने नमः

४१४. सिद्धाय नमः

४१५. प्रेद्धाय नमः

४१६. समुद्धराय नमः

- ४१७. समिद्धाय नमः
- ४१८. प्रतिभाविद्धाय नमः
- ४१९. सारज्ञाय नमः
- ४२०. सर्वशास्त्रविदे नमः
- ४२१. सुधास्वादुवचसे नमः
- ४२२. सूक्ष्ममतये नमः
- ४२३. मोहतमोरवये नमः
- ४२४. महायशसे नमः
- ४२५. महाशीलाय नमः
- ४२६. महौजसे नमः
- ४२७. महामुनये नमः
- ४२८. महनीयाय नमः
- ४२९. महासत्त्वाय नमः
- ४३०. माननार्हाय नमः
- ४३१. महार्थविदे नमः
- ४३२. मायातत्त्वविदे नमः
- ४३३. अव्यग्राय नमः
- ४३४. महीमण्डलपण्डिताय नमः
- ४३५. मातृकृत्यासाह्यकर्मशासकेरलभूसुराय नमः
- ४३६. यथाप्रतिश्रवाचीर्णस्मृतमातृप्रतिश्रुतये नमः
- ४३७. रवीन्दुदृशे नमः
- ४३८. दोर्मन्थोत्थाग्निसन्दीपिताम्बिकाय नमः
- ४३९. रसज्ञाय नमः
- ४४०. रसिताम्नायाय नमः

४४१. रागद्वेषहराय नमः

४४२. महते नमः

४४३. राजयोगिने नमः

४४४. आप्तकामाय नमः

४४५. निराशाय नमः

४४६. मातृवत्सलाय नमः

४४७. कामतन्त्रकलाह्यर्थकायान्तरनिवेशनाय नमः

४४८. काव्यरत्नविनिर्माणलब्योदात्तकविप्रथाय नमः

४४९. माधुर्यधुर्यफणितये नमः

४५०. मधुराधीशमानिताय नमः

४५१. ज्योतिःपुरेशविनुताय नमः

४५२. पारेजयपुरस्थितये नमः

४५३. विरूपाक्षस्थलासेविने नमः

४५४. विजयाख्यपुरीचराय नमः

४५५. विदिशादेशविहृतये नमः

४५६. विश्वनाथपदप्रियाय नमः

४५७. पाटलीपुत्रसंस्थानाय नमः

४५८. विष्णुपादप्रसेवनाय नमः

४५९. गयावटद्रमूलस्थाय नमः

४६०. भद्राचलनिरूढिधये नमः

४६१. वृन्दावनान्तसञ्चारिणे नमः

४६२. व्यासाचलबिलाश्रयाय नमः

४६३. ओङ्कारकुण्डविहृतये नमः

४६४. मिल्लकार्जुनमग्नधिये नमः

४६५. श्रीपञ्चनद्पञ्चास्यशिष्यषण्डनिषेविताय नमः

४६६. अहोबिलगुहारामाय नमः

४६७. कमलाक्षाय नमः

४६८. कलानिधये नमः

४६९. कलिध्वंसिने नमः

४७०. कामरूपाय नमः

४७१. कामचाराय नमः

४७२. कलामयाय नमः

४७३. परमेष्ठिने नमः

४७४. वशप्राणाय नमः

४७५. कामाक्षीसेवनोत्सुकाय नमः

४७६. प्राणदाय नमः

४७७. प्रणयिने नमः

४७८. पुष्टाय नमः

४७९. सर्वतन्त्रस्वतन्त्रधिये नमः

४८०. स्वतन्त्रात्मने नमः

४८१. नास्तिकान्तकृते नमः

४८२. प्रधिये नमः

४८३. आसनाध्वविदे नमः

४८४. दुग्धक्षपणकोत्सेधाय नमः

४८५. दाक्षिण्यनिधये नमः

४८६. अक्षताय नमः

४८७. दक्षाय नमः

४८८. दक्षिणदिक्सिद्धाय नमः

४८९. कालत्रयविदे नमः

४९०. आस्तिकाय नमः

४९१. आदेष्ट्रे नमः

४९२. अपौरुषाय नमः

४९३. ध्वस्तकापालिकमतक्रमाय नमः

४९४. कामिनीविमुखाय नमः

४९५. काम्याय नमः

४९६. कर्मत्यजे नमः

४९७. कार्मणाय नमः

४९८. कृतिने नमः

४९९. कल्याणगुणशीलाय नमः

५००. क्रियामुक्ताय नमः

५०१. कृपाघनाय नमः

५०२. कीर्तिमते नमः

५०३. कृतयोगेशपूजात्रातजगज्जनाय नमः

५०४. धम्मिल्लपुरराज्यश्रीबालार्चननृपार्चिताय नमः

५०५. वेदान्तभास्कराय नमः

५०६. ज्ञानचन्द्राय नमः

५०७. ऐश्वर्यवारिधये नमः

५०८. नेपालदेशभूपालवृषदेवोपदेशकृते नमः

५०९. कैलासकूटसङ्कष्तपशुपत्यर्चनाविधये नमः

५१०. सौगतव्रातनिष्कासपटवे नमः

५११. वैराग्यबोधकाय नमः

५१२. सुधीमणये नमः

- ५१३. दिव्यदर्शिने नमः
- ५१४. देवदैन्यहृते नमः
- ५१५. अभ्रमाय नमः
- ५१६. प्रसन्नकमलादत्तद्रिब्रबाह्मणीनिधये नमः
- ५१७. सम्फुल्लकुसुमप्रख्यमन्दमन्दस्मिताङ्कराय नमः
- ५१८. चिन्मुद्रापरिधूतान्तेवासिपुङ्गवसंशयाय नमः
- ५१९. हरिहारिवचोहासभस्मसात्कृतभैरवाय नमः
- ५२०. समाश्रितसुधन्वात्तपादुकानित्यपूजनाय नमः
- ५२१. नमःशोषिणे नमः
- ५२२. नामपराय नमः
- ५२३. नन्दिताशेषविष्टपाय नमः
- ५२४. एकदण्डिने नमः
- ५२५. कषायिने नमः
- ५२६. मुण्डिने नमः
- ५२७. खण्डितसौगताय नमः
- ५२८. दिगम्बरादिदुःसिद्धसिद्धान्तविनिबर्हणाय नमः
- ५२९. मिल्लकाश्वेतद्शनाय नमः
- ५३०. महिलादूरमानसाय नमः
- ५३१. कामारिमूर्तये नमः
- ५३२. कुतुकिने नमः
- ५३३. कमनीयगुणाकराय नमः
- ५३४. सोमोद्भवातटीक्रृप्तसौम्यगोविन्द्सेवनाय नमः
- ५३५. मालिकाप्रियचालुक्यराजपूजितविग्रहाय नमः

५३६. अत्याश्रमवरिष्ठाय नमः

५३७. श्रिये नमः

५३८. श्रितकल्पद्रमाय नमः

५३९. अश्रमाय नमः

५४०. मरुद्धधाजलस्नायिने नमः

५४१. घटोद्भवसुद्र्शनाय नमः

५४२. स्वयंविनम्रवृक्षाग्रशाखार्पितफलाशनाय नमः

५४३. वर्षद्वलाहकोन्मुक्तनीरासाराध्वमध्यगाय नमः

५४४. समुज्ज्वलद्दवज्वालादत्तवीथीवनाश्रयाय नमः

५४५. शरारुमृगनिर्व्यूढसरणीयसृतिक्रमाय नमः

५४६. सदानुकूलपवनाय नमः

५४७. वसिष्ठाय नमः

५४८. वाग्यताय नमः

५४९. वराय नमः

५५०. समीभवत्समुत्पाताय नमः

५५१. पांसून्मुक्तपथान्तराय नमः

५५२. तुषारशीकरस्पृष्टश्लिष्टपिष्टादनिकयाय नमः

५५३. मकरन्दझरीमान्यमधुरोक्तये नमः

५५४. महाकवये नमः

५५५. कमण्डलूदरकोडीकृतकल्लोलिनीझराय नमः

५५६. अमृष्टभस्मिक्कन्नांशुकान्तनीरचरस्थितये नमः

५५७. वेलाधामव्युदस्ताब्यये नमः

५५८. मृतसञ्जीवनेक्षणाय नमः

- ५५९. महाव्याधिप्रशमनाय नमः
- ५६०. मद्घ्राय नमः
- ५६१. मृगवश्यकृते नमः
- ५६२. जडकुङ्जादिसम्भाषिणे नमः
- ५६३. लतापुष्पकृतार्चनाय नमः
- ५६४. सौवस्तिककोष्ट्रबृन्दाय नमः
- ५६५. सौखसुप्तिककौशिकाय नमः
- ५६६. सौप्राभातिककाकोलाय नमः
- ५६७. सोखासनिकपन्नगाय नमः
- ५६८. सौखगायनकृद्भेकाय नमः
- ५६९. सौवातिथ्यकपुष्पलिहे नमः
- ५७०. सौवागतिकशार्दूलाय नमः
- ५७१. सौखोन्मृष्टिकवृश्चिकाय नमः
- ५७२. सौस्नातिकप्रस्रवणाय नमः
- ५७३. सोवभ्यञ्जनिकाम्बुदाय नमः
- ५७४. सौवीजितिकवातूलाय नमः
- ५७५. सौवनातिपकद्रमाय नमः
- ५७६. सौवासितिकपञ्चास्याय नमः
- ५७७. सोवन्धसिकवाहसाय नमः
- ५७८. सौविहासिकमत्तेभाय नमः
- ५७९. सौवध्युषितकृद्गुहाय नमः
- ५८०. सौप्रस्थितककान्ताराय नमः
- ५८१. सौशाकुनिकमौकलाय नमः

- ५८२. सौवापीतिकवेशन्ताय नमः
- ५८३. सौजिंग्धिकफलेग्रहये नमः
- ५८४. सौविलिप्तिकभूधूलये नमः
- ५८५. सौवस्त्रकपटचराय नमः
- ५८६. सौजापितिकभल्लूकाय नमः
- ५८७. सौवधीतिकचातकाय नमः
- ५८८. सौसंविष्टिकगोपुच्छाय नमः
- ५८९. सौवुद्गीतिककोकिलाय नमः
- ५९०. सोखप्रबुद्धिकश्वाविधे नमः
- ५९१. सोवाह्निकदिवाकराय नमः
- ५९२. सौरात्रिकतुषारांशवे नमः
- ५९३. सौयामिकदिवानिशाय तमः
- ५९४. अवाचे नमः
- ५९५. अकायाय नमः
- ५९६. अचित्ताय नमः
- ५९७. दण्डिने नमः
- ५९८. द्वैततमोरवये नमः
- ५९९. षङ्गुणाय नमः
- ६००. सप्तभङ्गीस्याद्वादभेदिने नमः
- ६०१. अष्टिसिद्धिमते नमः
- ६०२. त्र्यक्षमूर्तये नमः
- ६०३. चतुर्वर्गसुरभये नमः
- ६०४. बुद्धिवेषित्रे नमः

- ६०५. श्रीनवावरणार्चादिविद्याचार्याय नमः
- ६०६. अद्शाय नमः
- ६०७. अजराय नमः
- ६०८. रुद्रैकाद्शिनीजापस्त्रपितार्धेन्दुशेखराय नमः
- ६०९. निर्गन्धाय नमः
- ६१०. न्यस्तकमौंघाय नमः
- ६११. निःश्रेयसरताय नमः
- ६१२. अरतये नमः
- ६१३. निरन्ताय नमः
- ६१४. नीरुजाय नमः
- ६१५. अनीडाय नमः
- ६१६. नियमव्रजधूर्वहाय नमः
- ६१७. निगुम्भशतनिर्दिष्टनिर्दृष्टाद्वैतपद्धतये नमः
- ६१८. सङ्क्षेपशारीरककृत्सर्वज्ञात्मार्पितासनाय नमः
- ६१९. नैष्कर्म्यसिद्धिकृद्वार्तिककृद्देवेश्वरान्तराय नमः
- ६२०. प्रुष्टटीकापञ्चपादीपाठतोषितपद्मपदे नमः
- ६२१. हस्तामलकिताध्यात्महस्तामलकहंसकाय नमः
- ६२२. बहुमन्दानन्दिगिरितोटकप्रकटाय्र्यधिये नमः
- ६२३. चित्सुखाचार्यक्रुप्तात्मचर्याविख्यापिताश्रमाय नमः
- ६२४. उपदेशसहस्रादिप्रथितप्रकटाद्वयाय नमः
- ६२५. आम्नायाष्टकनिर्देष्ट्रे नमः
- ६२६. मध्यमाम्नायनिष्ठिताय नमः
- ६२७. विजृम्भणद्शाध्वस्ततथागतपथागताय नमः

- ६२८. द्वारकामठनिर्मात्रे नमः
- ६२९. कालिकापीठकल्पकाय नमः
- ६३०. सिद्धेश्वरसपर्याकृते नमः
- ६३१. भद्रकालीप्रसादनाय नमः
- ६३२. छन्दोगाय नमः
- ६३३. कीटवारस्थाय नमः
- ६३४. गोमतीतीर्थसेवनाय नमः
- ६३५. स्वरूपब्रह्मचार्यार्यपद्मपादनिदेशकृते नमः
- ६३६. आश्रमिणे नमः
- ६३७. तत्त्वमस्यादिमहावाक्यार्थरूपवते नमः
- ६३८. ज्योतिर्मठकराय नमः
- ६३९. ज्योतिष्मतीपीठनिदेशकृते नमः
- ६४०. बदर्याश्रमसंस्थानाय नमः
- ६४१. अलकनन्दावगाहनाय नमः
- ६४२. आथर्वणाङ्गिरोवेदिने नमः
- ६४३. श्रीपूर्णागिरिसेवकाय नमः
- ६४४. गोवर्धनमठीनाथाय नमः
- ६४५. गिरियोगपटाश्रयाय नमः
- ६४६. पुरुषोत्तमसत्क्षेत्रिणे नमः
- ६४७. विमलापीठकल्पकाय नमः
- ६४८. शतानन्दाय नमः
- ६४९. शतौजसे नमः
- ६५०. दशेन्द्रियविनिग्रहाय नमः
- ६५१. श्रीतुन्दिलितदेशश्रीऋश्यशङ्गगिरिश्रयिणे नमः

- ६५२. शारदावचनख्यातव्याख्यापीठाधिरोहणाय नमः
- ६५३. रामचन्द्रपुरक्षेत्रिणे नमः
- ६५४. तुङ्गभद्रातटाश्रमिणे नमः
- ६५५. वराहदेवतासारशारदाह्वयशक्तिभृते नमः
- ६५६. भूरिवारिणे नमः
- ६५७. कृष्णयजुर्वेदिने नमः
- ६५८. श्रीभारतीपदाय नमः
- ६५९. विभण्डकाधिष्ठानस्थमलहानिकरेशदृशे नमः
- ६६०. विरूपाक्षमहादेवमहनीयपदाश्रयाय नमः
- ६६१. मनीषिमण्डलीमान्यमौलाम्नायमहागुरवे नमः
- ६६२. प्राच्यप्रतीच्यावाच्योदीच्याम्नायादिमदेशिकाय नमः
- ६६३. प्राच्याम्नायसुविन्यस्तहस्तामलकसंस्तुताय नमः
- ६६४. प्रतीच्याम्नायसन्देशनानन्दितसनन्दनाय नमः
- ६६५. अवाच्याम्नायनिक्षिप्तपृथ्वीधरनताङ्किकाय नमः
- ६६६. उदीच्याम्नायजानन्दानन्दिगर्यभिवन्दिताय नमः
- ६६७. कामकोटीपीठपतये नमः
- ६६८. कम्पावेगवतीचराय नमः
- ६६९. एकाम्रनाथचरणसरोजातमधुव्रताय नमः
- ६७०. कामाक्षीचरणद्वन्द्वपादुकार्चनतत्पराय नमः
- ६७१. ऋग्वेदात्मने नमः
- ६७२. परब्रह्मव्यवस्थापनधीरिधये नमः
- ६७३. सत्यव्रतसमाख्यातकाञ्चन्तरितविग्रहाय नमः
- ६७४. सर्वज्ञपीठाध्यारोहलुप्तसार्वज्ञ्यसंशयाय नमः
- ६७५. सुरेश्वरादिसच्छात्रसमाराधितपादुकाय नमः

- ६७६. मीमांसाद्वयपारीणाय नमः
- ६७७. काणादाक्षपदाध्वविदे नमः
- ६७८. द्वात्रिंशदायुःकिलतित्रःप्रदक्षिणभूतलाय नमः
- ६७९. आसेतुहिमशैलान्तधर्मस्थापनदेशिकाय नमः
- ६८०. विद्यावशीकृताशेषदेशविद्वज्जनार्चिताय नमः
- ६८१. जगद्गुरवे नमः
- ६८२. जगद्योनये नमः
- ६८३. शास्त्रयोनये नमः
- ६८४. समन्वयिने नमः
- ६८५. स्पष्टास्पष्टब्रह्मलिङ्गिने नमः
- ६८६. साङ्खयोगविमर्शकृते नमः
- ६८७. वैयाकरणधीशोधिने नमः
- ६८८. वसिष्ठाय नमः
- ६८९. ककुबम्बराय नमः
- ६९०. गौतमीयवचोमुद्रिणे नमः
- ६९१. वैशेषिकमदापहाय नमः
- ६९२. शोद्धोदनिमदोत्सादिने नमः
- ६९३. जैमिनीयकुदृष्टिहृते नमः
- ६९४. दिगम्बरनयान्तन्नाय नमः
- ६९५. ध्वस्तपाशुपतिकयाय नमः
- ६९६. शून्यात्मवादनिर्हर्त्रे नमः
- ६९७. भिन्नभागवतागमाय नमः
- ६९८. विनोदिनर्मितप्रौढन्यायगम्भीरभाष्यकृते नमः

- ६९९. व्याख्यातजीवचरिताय नमः
- ७००. विश्वसृष्टिविशारदाय नमः
- ७०१. स्थितिसीमाविभागज्ञाय नमः
- ७०२. प्रलयार्थप्रकाशकाय नमः
- ७०३. संसारतत्त्वसङ्खावते नमः
- ७०४. मायातत्त्वनिरूपणाय नमः
- ७०५. समूलाविद्यकाध्यारोपोन्मूलनविचक्षणाय नमः
- ७०६. संसारतारणोपायसन्दर्शनपटिष्ठवाचे नमः
- ७०७. रसिकाह्रादजनकमहावाक्यचमत्कृतये नमः
- ७०८. ध्वनिप्रधानामरुकशतश्लोकीमहाकवये नमः
- ७०९. ब्रह्मसूत्रब्रह्मशिखागीताप्रस्थानभाष्यकृते नमः
- ७१०. प्रत्यग्ब्रह्मेक्यबोधाध्वद्रिाने नमः
- ७११. मोक्षाध्वदर्शकाय नमः
- ७१२. निरन्तरकृताम्नायशिरोनिगद्शीलनाय नमः
- ७१३. वेदान्तवनहर्यक्षाय नमः
- ७१४. तत्त्वज्ञानमहोद्धये नमः
- ७१५. तरुणाय नमः
- ७१६. तरुणीदूराय नमः
- ७१७. तारापतिसमच्छवये नमः
- ७१८. तारकब्रह्मतत्त्वज्ञाय नमः
- ७१९. तपस्विने नमः
- ७२०. तापसानुगाय नमः
- ७२१. तापत्रयविनिर्मुक्ताय नमः
- ७२२. निलनोक्तिनिरासकृते नमः

- ७२३. अलङ्कृतिने नमः
- ७२४. अतिमान्यश्रियै नमः
- ७२५. आत्मविदे नमः
- ७२६. ब्रह्मवित्तमाय नमः
- ७२७. ब्रह्मण्याय नमः
- ७२८. ब्रह्मभूताय नमः
- ७२९. स्वाधिष्ठानाञ्चितकाञ्चिगाय नमः
- ७३०. कृतपुण्यस्थलीयात्राय नमः
- ७३१. ऊर्ध्वाम्नायार्थतत्त्वविदे नमः
- ७३२. कैवल्यक्षेत्रविजयिने नमः
- ७३३. शुद्धमानसतीर्थकाय नमः
- ७३४. सुमेरुमूलसञ्चारिणे नमः
- ७३५. मायाशक्तिविभावनाय नमः
- ७३६. सत्यज्ञानाभिधाह्वानिने नमः
- ७३७. अखण्डानन्दमूर्तिमते नमः
- ७३८. सोहंशिवोहंवाक्यश्रिये नमः
- ७३९. प्रत्यगाम्नायवेदनाय नमः
- ७४०. निरञ्जनेश्वरासेविने नमः
- ७४१. श्रीकराय नमः
- ७४२. सम्प्रदायभृते नमः
- ७४३. विद्यापीठमहायोगिने नमः
- ७४४. परमात्ममठाश्रयाय नमः
- ७४५. त्रिपुटीतीर्थविहृतये नमः
- ७४६. योगक्षेत्रदिवाकराय नमः

- ७४७. श्रीविद्याशक्तिजपनाय नमः
- ७४८. मन्त्रिणे नमः
- ७४९. सन्तोषनैगमिने नमः
- ७५०. परहंसपरिव्राजे नमः
- ७५१. श्रीसिद्धाख्यब्रह्मचर्यभृते नमः
- ७५२. मातृकेकमहावाक्याय नमः
- ७५३. क्षेत्रज्ञाय नमः
- ७५४. अक्षरतः पराय नमः
- ७५५. निष्कलाम्नायनिरताय नमः
- ७५६. शान्तिदान्तियुताय नमः
- ७५७. चित्यै नमः
- ७५८. आनन्दपीठसंविष्टाय नमः
- ७५९. स्वानुभूतिपदाश्रयाय नमः
- ७६०. श्रद्धामैत्र्यादिनिर्ज्ञेयाय नमः
- ७६१. सिचन्मठसमाश्रयाय नमः
- ७६२. नभस्तीर्थाय नमः
- ७६३. नभोदर्शिने नमः
- ७६४. नभसे नमः
- ७६५. चिच्छक्तिचिन्तनाय नमः
- ७६६. प्रणवप्रणियने नमः
- ७६७. नम्रिणे नमः
- ७६८. नन्दगोपजपूजकाय नमः
- ७६९. भूम्ने नमः
- ७७०. ब्रह्मानन्दनाम्ने नमः

- ७७१. कूटस्थाय नमः
- ७७२. अक्षराय नमः
- ७७३. इष्टदाय नमः
- ७७४. पराक्प्रत्यगभिन्नाय नमः
- ७७५. सकलात्मने नमः
- ७७६. अकलाय नमः
- ७७७. पुरवे नमः
- ७७८. पुरुषाय नमः
- ७७९. पुष्कलाय नमः
- ७८०. पूर्णाय नमः
- ७८१. सत्तामात्राय नमः
- ७८२. पुरातनाय नमः
- ७८३. भोगयोगिने नमः
- ७८४. योगभोगिने नमः
- ७८५. भुवनात्मने नमः
- ७८६. वनेचराय नमः
- ७८७. भूतिकृते नमः
- ७८८. भूतिदाय नमः
- ७८९. भूताय नमः
- ७९०. भूरिशाय नमः
- ७९१. भूतभावुकाय नमः
- ७९२. चक्रभृते नमः
- ७९३. चक्रराजाचीसम्प्रदायप्रवर्तकाय नमः
- ७९४. चिकभूषणभूतात्मने नमः

- ७९५. चक्रपाणिनिषेविताय नमः
- ७९६. चक्रवर्तिशिरोभूषाशेषायितनखच्छवये नमः
- ७९७. चामीकरीकृतामत्रद्रिद्रब्राह्मणीगृहाय नमः
- ७९८. चतुरोदारगम्भीरवाक्यनिर्भरवादकृते नमः
- ७९९. चञ्चलाय नमः
- ८००. चन्द्रचूडात्मने नमः
- ८०१. जितचम्पकनासिकाय नमः
- ८०२. चर्चिताशेषभूचकसञ्चारिमतसञ्चयाय नमः
- ८०३. चालिताद्वैतविज्ञानाय नमः
- ८०४. चराय नमः
- ८०५. चित्रिणे नमः
- ८०६. चिदम्बराय नमः
- ८०७. चीर्णसत्यव्रतस्थानचिरन्तनसुखासिकाय नमः
- ८०८. चूर्णितच्छात्रहृद्गस्थये नमः
- ८०९. चूर्णपूर्णदुरास्यकृते नमः
- ८१०. प्रतिष्ठापकधौरेयाय नमः
- ८११. प्रतिष्ठितमहायशसे नमः
- ८१२. प्रौढविज्ञानवादिस्थगर्वसर्वङ्कषोदिताय नमः
- ८१३. नन्दिताशेषभूचारिणे नमः
- ८१४. यतिधर्मविमर्शकृते नमः
- ८१५. दर्शिताध्यात्मयाथात्म्याय नमः
- ८१६. सुधीसङ्घनिषेविताय नमः
- ८१७. नदीनद्सरस्तीर्थाष्ट्रावपावितविग्रहाय नमः

- ८१८. पण्डितव्रातपाण्डित्यप्रमोषणपटूदिताय नमः
- ८१९. तत्पदार्थप्रकटनाय नमः
- ८२०. त्वम्पदार्थविवेककृते नमः
- ८२१. नित्यानन्दाय नमः
- ८२२. निरालम्बाय नमः
- ८२३. निरक्षाय नमः
- ८२४. निखिलेक्षकाय नमः
- ८२५. नित्यधिये नमः
- ८२६. नित्यसङ्कल्पाय नमः
- ८२७. निधिस्थाय नमः
- ८२८. निरविद्यकाय नमः
- ८२९. नित्यवासिने नमः
- ८३०. नित्यशुचये नमः
- ८३१. निर्लुब्धाय नमः
- ८३२. निगमारिघ्ने नमः
- ८३३. निरञ्जनाय नमः
- ८३४. नित्यपूज्याय नमः
- ८३५. नित्यमुक्ताय नमः
- ८३६. निरीश्वराय नमः
- ८३७. निष्कर्त्रे नमः
- ८३८. निष्कृतये नमः
- ८३९. निःस्वाय नमः
- ८४०. निष्काय नमः
- ८४१. निखिलवासभुवे नमः

८४२. पुरीशाय नमः

८४३. पूर्वगाय नमः

८४४. पुण्याय नमः

८४५. पूर्वनामिने नमः

८४६. पुरुप्रियाय नमः

८४७. विख्यातवीर्याय नमः

८४८. विद्येशाय नमः

८४९. श्रीविद्याषोडशीगुरवे नमः

८५०. लक्ष्म्ये नमः

८५१. लक्ष्याय नमः

८५२. लक्ष्मणाय नमः

८५३. लक्षणज्ञाय नमः

८५४. लसत्पदाय नमः

८५५. हीमते नमः

८५६. हंसगतये नमः

८५७. हंसाय नमः

८५८. हंसश्वेतहृदम्बुजाय नमः

८५९. हंसमन्त्रार्थतत्त्वज्ञाय नमः

८६०. हंसवर्णाय नमः

८६१. हरिप्रियाय नमः

८६२. हर्षामर्षसहाय नमः

८६३. हासकुशलाय नमः

८६४. हानिवृद्धिनुदे नमः

८६५. सभ्याय नमः

- ८६६. सभापतये नमः
- ८६७. स्वामिने नमः
- ८६८. सम्भृतये नमः
- ८६९. सम्भवापहाय नमः
- ८७०. हीवेरशीतलस्वान्ताय नमः
- ८७१. हीमतीहारितात्मभाजे नमः
- ८७२. लिक्षताशेषमन्त्रार्थाय नमः
- ८७३. लक्षकोट्यण्डनायकाय नमः
- ८७४. ललिताङ्गाय नमः
- ८७५. लयज्ञात्रे नमः
- ८७६. लब्धस्वाय नमः
- ८७७. लब्धहर्षणाय नमः
- ८७८. कम्बुकण्ठाय नमः
- ८७९. कलिध्वंसिने नमः
- ८८०. कल्याणात्मने नमः
- ८८१. कलध्वनये नमः
- ८८२. भूषितान्तर्वाणिचक्राय नमः
- ८८३. भूगाय नमः
- ८८४. भूसुरसेविताय नमः
- ८८५. यागविदे नमः
- ८८६. योगविदे नमः
- ८८७. युक्ताय नमः
- ८८८. यशोदाय नमः
- ८८९. यमप्रियाय नमः

- ८९०. ओङ्कारव्याहृतिव्यग्राय नमः
- ८९१. निमतारातिमण्डलाय नमः
- ८९२. नागशैलशिरश्चारिणे नमः
- ८९३. रामगिर्याश्रमाश्रयाय नमः
- ८९४. वाञ्छितार्थप्रदाय नमः
- ८९५. शर्वाय नमः
- ८९६. अदीनाय नमः
- ८९७. मोदमेदुराय नमः
- ८९८. यतिचर्याविवेकज्ञाय नमः
- ८९९. यतिधये नमः
- ९००. यतभावनाय नमः
- ९०१. ओङ्कारिणे नमः
- ९०२. वितताद्वैतश्रुतिन्यायाय नमः
- ९०३. कृपानिधये नमः
- ९०४. यन्त्रे नमः
- ९०५. यतमनसे नमः
- ९०६. यम्याय नमः
- ९०७. यज्ञाङ्गाय नमः
- ९०८. यज्ञभूषणाय नमः
- ९०९. यज्ञाय नमः
- ९१०. यज्ञपतये नमः
- ९११. यज्वने नमः
- ९१२. यज्ञभुवे नमः
- ९१३. यज्ञभावनाय नमः

- ९१४. कृपार्पितकरालम्बाय नमः
- ९१५. विध्वस्तविधये नमः
- ९१६. अण्डसुवे नमः
- ९१७. निखिलक्ष्मातलाचार्याय नमः
- ९१८. पाषण्डमतखण्डनाय नमः
- ९१९. प्रतिष्ठापकमूर्धन्याय नमः
- ९२०. मताद्वयमहानयाय नमः
- ९२१. परिव्राजकधूर्वोंढ्रे नमः
- ९२२. अनन्तधुरे नमः
- ९२३. अन्तरान्तराय नमः
- ९२४. मुक्ताय नमः
- ९२५. मुकुन्दाय नमः
- ९२६. मध्यस्थाय नमः
- ९२७. मददूराय नमः
- ९२८. मनोमयाय नमः
- ९२९. शान्ताय नमः
- ९३०. शुभङ्कराय नमः
- ९३१. शुक्राय नमः
- ९३२. शूराय नमः
- ९३३. शोकविवर्जिताय नमः
- ९३४. भिक्षवे नमः
- ९३५. तरक्षवे नमः
- ९३६. क्षमित्रे नमः
- ९३७. अक्षतये नमः

९३८. साक्षतार्चनाय नमः

९३९. राजराजार्चिताय नमः

९४०. रङ्याय नमः

९४१. रञ्जकाय नमः

९४२. रिममते नमः

९४३. रमाय नमः

९४४. रमणाय नमः

९४५. रसवादिने नमः

९४६. रजताद्रिनिकेतनाय नमः

९४७. अस्थूलाय नमः

९४८. अनणवे नमः

९४९. हस्वाय नमः

९५०. मनवे नमः

९५१. मेधायै नमः

९५२. महामनसे नमः

९५३. बहुपादाय नमः

९५४. बहुभुजाय नमः

९५५. बहुशीर्षाय नमः

९५६. बहुप्रियाय नमः

९५७. नान्तःप्रज्ञाय नमः

९५८. नप्रज्ञाय नमः

९५९. नबहिःप्रज्ञाय नमः

९६०. नाप्रज्ञाय नमः

९६१. प्रज्ञानघनाय नमः

९६२. विज्ञानात्मने नमः

९६३. विलासकृते नमः

९६४. प्रियाप्रियस्पर्राहीनाय नमः

९६५. अमृताय नमः

९६६. आकाशदेहवते नमः

९६७. अभूमये नमः

९६८. अजलाय नमः

९६९. अनग्नये नमः

९७०. अवायवे नमः

<mark>९७१. अनम्बराय नमः</mark>

९७२. अग्राह्याय नमः

९७३. अद्रेश्यकाय नमः

९७४. अश्रोत्रे नमः

९७५. श्रोत्रे नमः

९७६. कर्त्रे नमः

९७७. अकर्तृकाय नमः

९७८. अगन्धाय नमः

९७९. अरसकाय नमः

९८०. अरूपाय नमः

९८१. अस्पर्शाय नमः

९८२. अशब्दाय नमः

९८३. शब्दभाजे नमः

९८४. मन्त्रे नमः

९८५. अमन्त्रे नमः

९८६. अनुमन्त्रे नमः

९८७. बोद्धे नमः

९८८. अबोद्धे नमः

९८९. प्रबोधकृते नमः

९९०. एकाय नमः

९९१. अनेकाय नमः

९९२. केवलात्मने नमः

९९३. सर्वस्मे नमः

९९४. संसारमोचनाय नमः

९९५. नित्यशुद्धाय नमः

९९६. नित्यबुद्धाय नमः

९९७. नित्यमुक्ताय नमः

९९८. निराश्रयाय नमः

९९९. हार्दाविद्यातमश्छेचे नमः

१०००. भक्तहत्पद्मभास्कराय नमः



श्रीमत्-राङ्कर-भगवत्पाद-सहस्रनामानि (अर्थसहितानि)

१. श्रीगुरुः — ஸ்ரீ குருவே நமஸ்காரம்

२. शुद्धहृद्यः — சுத்தமான ஹ்ருதயத்தை உடையவர்

३. श्रेयान् — உயர்ந்தவர்

४. शान्तः — (அவாக்கள்) அடங்கிய மனதை உடையவர்

- ५. द्यानिधिः கருணையின் கருவூலமானவர்
- **६. दान्तः** புற புலன்களை அடக்கியவர்
- ७. तितिक्षुः பொறுமை உடையவர்
- ८. चन्द्राभः சந்திரன் போல் பிரகாசிப்பவர்
- ९. न्यस्तकर्मा (ஸம்ஸாரிகளின்) செயல்களை விடுத்தவர்
- १०. समाहितः மனதையும் புலன்களையும் ஸத்விஷயங்களில் நிறுத்தியவர்
- ११. चटुलः அழகுற எப்பொழுதும் காரியங்களில் முற்பட்டவர்
- १२. यतचित्तः மனதை அடக்கியவர்
- १३. श्रद्धानः (மாஸ்த்ரம் மற்றும் குரு வாக்கியத்தில்) நம்பிக்கை உடையவர்
- १४. चिरन्तनः (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில் காலவரையறையற்றவராக முந்தையவர்களுக்கெல்லாம் குருவாக) தொன்றுதொட்டு இருப்பவர்
- १५. चापलः (மக்கள் நல்வழியில் வரமாட்டார்களா என்ற) அவா கொண்டவர்
- १६. चतुरास्येड्यः ப்ரஹ்மாவால் போற்றப்பட்டவர்
- १७. चरितव्रतकोविदः விடாது நன்னடத்தையில் திறம்பட இருப்பவர்
- **१८. चतुरः** திறமைசாலி
- **१९. श्रुतिमोलिस्थः** (வேதத்தின் உச்சியில்) வேதாந்தத்தில் (ஆசார்யனாக) நின்றவர்
- **२०. शिवः** णीவனாரின் (அவதாரமானவர்)
- **२१. शुद्धप्रबोधकः** தூயதை நன்கு போதிப்பவர்
- २२. वशी (உணர்ச்சிகளை) தன் கட்டுக்குள் வைத்தவர்
- **२३. विश्वेश्वरः** (மூல வடிவில்) உலகத்தை ஆள்பவர்
- २४. मुख्यः मीறந்தவர்
- २५. अमूल्यः மதிப்பிட முடியாதவர்
- २६. मूलकृत् (அத்வைதத்தின்) மூல (பாஷ்ய நூல்களை) செய்தவர்

- २७. मरवी யஜ்ஞங்களை (தான் காப்பாற்றவேண்டியவையாகக்) கொண்டவர்
- २८. मूर्घाभिषिक्तः தலைவராக பட்டாபிஷேகம் செய்விக்கப்பட்டவர்
- **२९. सर्वेशः** அனைத்தையும் செய்யவல்லவர்
- ३०. महादेवः பெரும் தேவன் (அல்லது பூதேவர்களுக்குள் சிறந்தவர்)
- **३१. मदामदः** சுகமும் துக்கமும் (அனுபவிக்கும் ஶரீரமெனும் உபாதிக்கு உட்புகுந்தவர்)
- ३२. भवः உலக உற்பத்திக்கு காரணமானவர்
- ३३. रुद्रः அழுகையைப் போக்குபவர்
- **३४. हरः** (பாபங்களை) நீக்குபவர்
- ३५. मुग्धः கள்ளங்கபடமின்மை என்ற அழகை உடையவர்
- ३६. शर्वः (தோஷங்களை) அழிப்பவர்
- ३७. ईशानः (உலகு) ஆள்வதை சுபாவமாகக் கொண்டவர்
- ३८. ईश्वरः திறம்பட (உலகு) ஆள்வபர்
- ३९. महेराः சக்தியுடையவர்களில் சிறந்தவர்
- **४०. स्वस्तिकृत्** (பக்தர்களுக்கு) நலத்தை விளைவிப்பவர்
- ४१. सुस्थः (ஆத்மா, மனஸ், இந்த்ரியங்கள்) ப்ரஸன்னமாக இருப்பவர்
- **४२. स्थिरः** உறுதியாக இருப்பவர்
- ४३. स्थाणुः அசைவற்ற (பரம்பொருளாக) இருப்பவர்
- **४४. सुराचिंतः** தேவர்களால் போற்றப்படுபவர்
- **४५. शाश्वतः** என்றும் இருப்பவர்
- ४६. सोम्यवद्नः இனிமை மிகுந்த முகமுள்ளவர்
- ४७. सिद्धयोगिनिषेवितः ஸித்தர்களாலும் யோகிகளாலும் வணங்கப்பட்டவர்
- **४८. सोमः** (கருணையாகிய) உமையுடன் இருப்பவர் (அல்லது) சந்த்ரனை (போல் உபதேச அமுதம் பொழிபவர்)

- ४९. सुधास्वच्छतनुः அம்ருதமயமான சுத்தமான உடலைக் கொண்டவர்
- ५०. श्रीमान् (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வம் உடையவர்
- ५१. प्रेयान् (பக்தர்களின்) மிகுந்த அன்பிற்குரியவர்
- ५२. जगत्पतिः உலகுக்கு தலைவர்
- **५३. श्रीकण्ठः** (உலகைக் காக்க) விடமுண்ட கண்டன் ஆனவர்
- ५४. श्रितवात्सल्यः (பக்தர்களிடம்) அன்புகாட்டுவதில் நிலைத்தவர்
- ५५. शाम्भवः சிவனை வழிபடுபவர்
- **५६. राङ्कराभिधः** சங்கர என்ற பெயர் கொண்டவர்
- ५७. वीरः (தர்மத்தைக் காப்பதில்) வீரர்
- **५८. शुभविहारी** ஸஞ்சாரத்தால் மங்களத்தைப் பரப்புபவர்
- ५९. **राुद्धब्रह्मेक्यमूर्तिमान्** சுத்த பிரம்மத்தில் ஐக்கியமே தனது (உண்மை) வடிவமாக உடையவர்
- **६०. अखिलः** முழு (பிரபஞ்ச வடிவினர்)
- ६१. अखिलऋग्गम्यः அனைத்து மந்திரங்களாலும் போதிக்கப்படுபவர்
- **६२. भूतात्मा** (ஐம்) பூதங்களுக்கு உள்ளிருப்பவர்
- **६३. भूतकृत्** (ஐம்) பூதங்களை உருவாக்கியவர்
- ६४. विभुः எங்கும் நிறைந்தவர்
- ६५. **आज्ञाकृत्** (சிவனார் வடிவில் தேவர்களை அந்தந்த வடிவில் பிறக்கும்படி) கட்டளையிட்டவர்
- ६६. अमरोद्योगी தேவர்களின் (நலனுக்காக) முயற்சி செய்பவர்
- **६७. किरोनीतसुरार्थितः** கலிக்கு பயப்படும் தேவர்களால் (தக்ஷிணாமூர்த்தி வடிவில்) வேண்டப்பட்டவர்
- ६८. गुहादेशी முருகனை (குமாரில பட்டராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்

- **६९. गुहागेही** (அவ்வப்போது மலை) குஹைகளை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
- **७०. विष्णुब्रह्मनिदेशकृत्** விஷ்ணு ப்ரஹ்மா (இவர்களை ஸநந்தனர் மற்றும் ஸுரேச்வரராக அவதரிக்கும்படி) உத்தரவிட்டவர்
- ७१. गृह्यः (அஸத்துகளிடம் சொல்லத்தகாத) ரகசியமானவர்
- ७२. गुहारायः (ஹ்ருதய) குஹையில் உறைபவர்
- ७३. गूढः (ப்ரஹ்ம வடிவில் அறியவொண்ணாது எவ்விடமும்) ஒளிந்திருப்பவர்
- **७४. भूरिदः** அள்ளி வழங்குபவர்
- **७५. भूतिकृत्** செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
- ७६. बुधः அறிஞர்
- ७७. भूभृत्स्थः ഥതെധിல് സஞ்சரிப்பவர்
- ७८. भूतिभृत् (உலகில் தர்மமெனும்) செல்வத்தை பராமரிப்பவர்
- **७९. भूभुक्** உலகைக் காப்பவர்
- ८०. भूतेशः ஜீவராசிகளுக்கு தலைவர்
- ८१. भूतभावनः ஜீவராசிகளை உருவாக்கியவர்
- ८२. भद्रः மங்களமானவர்
- ८३. भव्यः மனதிற்கினியவர்
- ८४. भवभिषक् பிறவிப்பிணிக்கு வைத்தியர்
- **८५. भक्तपूज्यः** பக்தர்களால் பூஜை செய்யப்படுபவர்
- ८६. पिनाकभृत् (சிவனார் வடிவில்) பிநாகம் (என்னும் வில்லை) தாங்கியவர்
- **८७. मण्डलात्मा** (ஸத்துக்களின்) மண்டலத்திற்கு ஆத்மாவாக இருப்பவர்
- **८८. मधुरवाक्** இனியன மொழிபவர்
- ८९. स्मितः प्रकांबाकि प्रुहंड्यां
- ९०. मान्यः மரியாதைக்குரியவர்

- ९१. मधुः தேனனைய (ஸாரமான ஆனந்தம் கொடுக்கும் பரம்பொருளானவர்)
- ९२. मुनिः மௌனமாக சிந்திப்பவர்
- **९३. महातेजाः** பேரொளிபடைத்தவர்
- ९४. महितवाक् பெருமைக்குரியன சொல்பவர்
- **९५. अलङ्कारः** (பூமியை) அலங்கரிப்பவர்
- **९६. अमलः** (முந்தைய பிறப்பில் சேகரித்து தீய எண்ணமாகிய) அழுக்கு இல்லாதவர்
- ९७. अनघः பாவமில்லாதவர்
- ९८. बालः (எளிமை மற்றும் கபடமின்மையில்) குழந்தை போன்றவர்
- ९९. अबलेषणामुक्तः பெண்ணாசை அற்றவர்
- १००. आर्यभूः (வெளிப்படையாகவும் ஸூக்ஷ்மமாகவும்) சான்றோரிடையே இருப்பவர்
- १०१. आर्यसंश्रयः சான்றோருக்கு அடைக்கலமாக இருப்பவர்
- १०२. शीली சீலம் மிகுந்தவர்
- १०३. **शिवगुरुप्रेष्ठः** मीळाकुणिओळं பंगीш (மகனார்)
- १०४. आर्याम्बासुप्रजा ஆர்யாம்பாவின் உயர்ந்த குழந்தை
- १०५. शिवः மங்களமானவர்
- **१०६. परात्परः** அப்பாலுக்கும் அப்பாலாய் இருப்பவர்
- १०७. त्रयस्त्रिंशत्कोटिदेवसुसन्नुतः முப்பத்து முக்கோடி தேவர்களால் நன்கு வணங்கப்படுபவர்
- १०८. उदारधीः விசாலமான மனம் உடையவர்
- १**०९. सत्यरूपः** ஸத்ய வடிவினர்
- ११०. कालटीजननः காலடியில் பிறந்தவர்
- १११. अद्वयः இரண்டற்றவர்

- ११२. विद्यापितः கல்விக்கு தலைவர்
- ११३. वटुः ப்ரஹ்மசாரியாக இருப்பவர்
- ११४. वेद्यः (த்யானத்தால்) அறிய வேண்டியவர்
- ११५. चिन्मयः किम्ठुकं ॥ व्यव्यविकारं
- ११६. चूर्णिकाप्रियः कुंगळ्लीका (பூர்ணா என்னும் நதியில் பால்யத்தில்) களித்தவர்
- ११७. श्रीमात्रर्थितगार्हस्थः மதிப்பிற்குரிய அன்னையால் இல்லறம் (ஏற்கும்படி) வேண்டப்பட்டவர்
- ११८. श्रेयोधीः (இல்லறத்தை விட) உயர்ந்ததை மனதில் அசையாது கொண்டவர்
- ११९. श्रितदेशिकः ஆசார்யனை சரணடைந்தவர்
- १२०. श्रीमुखः (குரு முதன்முறை பார்த்தபோதே ஞானப்) பொலிவுடைய முகமுள்ளவராக (திகழ்ந்தவர்)
- १२१. श्रीधरः (அப்பொழுதே ஞான) லக்ஷ்மியைத் தாங்குபவராக (விளங்கியவர்)
- १२२. शुष्मी (உலகோருக்கு வழிகாட்டுவதற்கான) தேஜஸ்ஸைக் கொண்டவராக (குருவால் காணப்பட்டவர்)
- १२३. शासिता (சாஸ்த்ரத்தின்) உத்தரவை போதிப்பவர்
- **१२४. शुचिः** தூயவர்
- १२५. उज्ज्वलः (தேஜஸ்ஸால்) மிகவும் ஜ்வலிப்பவர்
- १२६. साधुः (பிறரின் நன்மையை) ஸாதித்துக்கொடுப்பவர்
- १२७. स्थेयान् வலுவானவர்
- १२८. संयियंसुः துறவறம் பெற விரும்பியவர்
- १२९. सरिदाप्रुतविग्रहः (பூர்ணா) நதியில் உடல் முழுவதும் நனைத்தவர்
- **१३०. ग्राहग्रहव्याजलब्धप्रसूसन्त्र्याससम्मतिः** முதலை பிடித்ததை வ்யாஜமாகக் கொண்டு தாயிடம் துறவறத்திற்கு அனுமதி பெற்றவர்
- **१३१. सन्यस्तः** (உடனே ஆபத்) ஸந்ந்யாஸம் பெற்றவர்

- १३२. संयमी புலன்களை அடக்கியவர்
- १३३. प्रेषी ஸந்ந்யாஸ மந்த்ரத்தை உச்சரித்தவர்
- **१३४. संसारत्यागतत्परः** ஸம்ஸார (வாழ்க்கையை) தியாகம் செய்வதில் முனைந்தவர்
- १३५. अर्चिष्मान् (துறவறத்தால் புதிய) பொலிவு பெற்றவர்
- १३६. आत्तगोविन्दः கோவிந்த (பகவத்பாதரை மனதினால் குருவாக) வரித்தவர்
- १३७. प्रस्थितः (குருவிருக்கும் இடம் நோக்கி) கிளம்பியவர்
- १३८. प्राप्तसद्गुरुः ஸத்குருவை சென்றடைந்தவர்
- **१३९. आमोदी** (குருவினால் சிஷ்யனாக) ஆமோதிக்கப்பட்டவர் / ஞான நறுமணம் கொண்டவர்
- १४०. निगमान्तज्ञः வேதாந்தத்தை அறிந்தவர்
- १४१. एकानन्दरसात्मकः ஒரே ஆனந்த ரஸமாக எப்போதும் இருப்பவர்
- १४२. श्रीब्रह्मसूत्रव्याख्याता ஸ்ரீ பிரம்ம சூத்திரத்திற்கு வியாக்யானம் எழுதியவர்
- १**४३**. **एकदण्डः** ஒரே தண்டத்தை கொண்டவர்
- १४४. कषायभृत् காவியை உடுத்தியவர்
- १४५. भक्तप्रपञ्चसच्छात्रः பக்தர்களாகிய உலகத்தோர் (தமக்கு) மாணவர்களாகக் கொண்டவர்
- १४६. गोविन्दभगवित्प्रयः கோவிந்த பகவத்பாதருக்கு பிரியமானவர்
- **१४७. हरिसब्रह्मचारी** (அவரது பூர்வாச்ரம புத்ரராகிய பர்த்ரு)ஹரியின் சக மாணவர்
- १४८. स्पृष्टगौडपदाम्बुजः கௌட(பாதரின்) பாதங்களைத் தொட்டு (வணங்கியவர்)
- १४९. मातङ्गश्रीमहादेवीयोक्तिस्थापितसन्मतः மாதங்க மஹாராணியின் வேண்டுகோளின்படி (அந்த ராஜ்ஜியத்தில்) நல்தர்மத்தை ஸ்தாபித்தவர்
- १५०. यतितीर्थादिपुर्यन्तसम्प्रदायप्रवर्तकः யதிகளுக்கு தீர்த்த முதல் புரீ வரை (தசநாமி) ஸம்ப்ரதாயத்தை ஏற்படுத்தியவர்

- १५१. बाद्रायणवाग्वादी (முதியவர் வேடத்தில் வந்த) வியாசருடன் வாதம் புரிந்தவர்
- १५२. बहुशिष्यपरीवृतः பல சிஷ்யர்களால் புடைசூழ்ந்தவர்
- १५३. पद्मपाद्सनाथः பத்மபாதரை (சிஷ்யனாக ஏற்று) பாதுகாத்தவர்
- १५४. योगप्राप्तहराचलः யோகத்தினால் ஹரனின் மலைக்கு (கைலாயத்திற்கு) சென்றவர்
- १५५. **आनीतलिङ्गकुलकः** (சிவனார் அளித்த) ஐந்து லிங்கங்களை எடுத்து வந்தவர்
- १५६. आनन्दलहरीग्रहः (ஸௌந்தர்ய லஹரியின் முன் பகுதியாகிய) ஆநந்தலஹரியை பெற்றவர்
- १५७. केदारेशप्रतिष्ठाता கேதாரில் முக்தி லிங்கத்தை ப்ரதிஷ்டை செய்தவர்
- १५८. नेपालवरलिङ्गकृत् நேபாளத்தில் வர லிங்கத்தை வைத்தவர்
- १५९. काश्मीरादिक्षेत्रवासी காச்மீரம் முதலான இடங்களில் வசித்தவர்
- १६०. दुर्वादिमतखण्डनः கெட்ட வாதங்களுடைய மதங்களை கண்டித்தவர்
- **१६१. श्रीहस्तिगिरिनाथादिदिव्यक्षेत्रचरः** ஹஸ்திகிரி (விஷ்ணு காஞ்சி) முதலான க்ஷேத்திரங்களுக்கு சென்றவர்
- १६२. सुधीः நல்லறிவு உள்ளவர்
- **१६३. रुद्धभट्टोक्तिराद्धान्तः** (குமாரில) பட்டர் கூறிய (ஈசன் தேவையில்லை, கருமமே பலனளிக்கும் என்ற) ஸித்தாந்தத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
- १६४. जितमण्डनभारतिः மண்டன மிச்ரர் (மற்றும் அவரது பத்னியான) பாரதியை வெற்றி கொண்டவர்
- **१६५. परकायप्रवेशाप्तपाञ्चशर्यमहागमः** பரகாய ப்ரவேசம் செய்து காம சாஸ்த்ர நுணுக்கங்களை அறிந்தவர்
- **१६६. गुहानृसिंहसंस्तावलब्यदग्धकराम्बुजः** (பரகாய ப்ரவேசத்தின் போது) குஹையில் (ஒளிக்கப்பட்டிருந்த தமது இயல்பு உடலை சிலர் எரிக்க முயன்ற போது) நரசிம்மரை வேண்டி எரிந்த தன் கரத்தாமரைகளை மீட்டுப்பெற்றவர்

- **१६७. सरस्वतीजयाध्मातयतीश्वरसुरेश्वरः** கலைவாணியை வெற்றிகொண்டு ஸுரேம்வரரை துறவி ஆக்கியவர்
- १६८. हस्तामलकसेव्याङ्किः ஹஸ்தமலகரால் ஸேவிக்கப்பட்ட திருவடிகளைக் கொண்டவர்
- १६९. तोटकार्यसुसेवितः தோடகாசார்யரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
- १७०. चित्सुखोदङ्कसच्छात्रविन्दिताङ्किः சித்ஸுகர் உதங்கர் (போன்ற) நல்மாணவர்களால் வணக்கப்பட்ட திருவடியினர்
- १७१. गुणाम्बुधिः குணக்கடலானவர்
- १७२. इच्छालक्यिगिरीशात्मा விருப்பப்படி (தனது மூல) சிவ வடிவம் எடுக்கக்கூடியவர்
- १७३. गौरीकान्तः கௌரியை ஈர்த்தவர்
- १७४. गुरूत्तमः உத்தமமான குரு
- १७५. गुरुराजः குருமார்களுக்கரசர்
- १७६. गुणी நல்ல குணம் உடையவர்
- १७७. गोप्ता (பக்தர்களைக்) காப்பவர்
- १७८. गोपनः (ரகசியங்களை) ஒளிப்பவர்
- १७९. नराकृतिः மனித வடிவம் கொண்ட (தெய்வம்)
- १८०. निर्ममः மமதையற்றவர்
- १८१. नरकारातिः நரகத்திற்கு எதிரி
- १८२. नम्यः வணங்கத்தக்கவர்
- **१८३. नाथः** தலைவர்
- १८४. निरञ्जनः அப்பழுக்கற்றவர்
- १८५. निस्स्पृहः ஆசைகளை கட்டுப்படுத்தியவர்
- १८६. निष्कलः பகுக்க முடியாத (பிரமமே சொரூபமானவர்)

- १८७. नित्यः என்றும் இருப்பவர்
- १८८. नामरूपविवेकवान् பெயர் உருவம் (இரண்டும் ப்ரஹ்மத்தைக் காட்டிலும் வேறு என்ற) விவேகம் உள்ளவர்.
- १८९. **नालीकः** பொய்யற்றவர்
- १९०. निष्क्रियः செயல்களுக்கப்பாற்பட்டவர்
- १९१. नीरक् வலியற்றவர்
- १९२. निराशीः ஆசைகள் இல்லாதவர்
- १९३. निरामयः வியாதி இல்லாதவர்
- १९४. निर्नातः (யாருக்கும் தலை) வணங்கத் (தேவை) இல்லாதவர்
- १९५. निःस्वधाकारः ஸ்வதா (என்று சொல்லி செய்யும் பித்ரு காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
- **१९६. निःस्वाहाकृत्** ஸ்வாஹா (என்று சொல்லி செய்யும் தேவ காரியம்) இல்லாதவர் (ஸந்ந்யாஸி)
- १९७. निरीश्वरः (தனக்கு மேற்பட்ட) ஈசனில்லாதவர்
- १९८. नीरूपकः உருவற்ற (பரம்பொருளானவர்)
- १९९. निर्गुणः குணமற்ற (பரம்பொருளானவர்)
- २००. निष्कर्मा புண்ணிய பாபமற்ற (பரம்பொருளானவர்)
- २०१. निर्व्यथः துக்கமற்றவர்
- **२०२. वर्शी** வசீகரிப்பவர்
- २०३. निर्लेपः பற்றில்லாதவர்
- २०४. नित्यपुष्टः என்றும் வலுவானவர்
- २०५. हृष्टः உற்சாகமுள்ளவர்
- २०६. तुष्टजनाश्रयः திருப்தியான ஜனங்களால் ஆம்ரயிக்கப்படுபவர்
- २०७. साक्षात्कारी (ப்ரம்ம ஞான நிலையை) நேரடியாக அனுபவித்தவர்

- २०८. सन्निधानः (ப்ரம்ம ஞான நிலைக்கு) அருகில் சேர்ப்பிப்பவர்
- २०९. सूरिः தத்துவமறிந்தவர்
- २१०. सायङ्गृहः (அன்றன்று) மாலை (எங்குள்ளாரோ அங்கேயே இரவு தங்கும்) வீடாக கொண்டவர்
- २११. यमी புலன்களை கட்டுப்படுத்தியவர்
- <mark>२१२. सत् உ</mark>ண்மை வடிவினர்
- २१३. सात्वान् உண்மை(பொருளான பகவானை) உபாஸிப்பவர்
- २१४. सात्त्विकः சத்வ குணம் நிரம்பியவர்
- २१५. सभ्यः கலாசாரம் நிரம்பியவர்
- २१६. सर्वमित्रः அனைவருக்கும் நண்பர்
- **२१७. स्मरान्तकः** காமனை அழித்தவர்
- २१८. सिशिष्यः சிஷ்யர்களுடன் கூடியவர்
- २१९. सङ्ग्रही (வேத தாத்பரியத்தை) ஸங்க்ரஹம் செய்தவர்
- **२२०. ज्यायान्** மூத்தவர்
- २२१. बली சக்திமிக்கவர்
- २२२. वाग्मी வாக்கு வன்மை மிக்கவர்
- २२३. मितोक्तिकृत् அளவோடு பேசுபவர்
- २२४. वाचंयमः പേச்சை அடக்கியவர்
- २२५. वरिष्ठः மிக உயர்ந்தவர்
- **२२६. व्याख्यानाख्यायिकापटुः** உரைகளை சரித்திரங்கள் (போல் அழகுற உருவாக்குவதில்) திறமிக்கவர்
- **२२७. परमः** எல்லாவற்றிலும் உயர்ந்தவர்
- २२८. परिभूः சுற்றிலும் இருக்கும் (பரம்பொருளானவர்)
- २२९. प्रोटः பக்குவமானவர்

- **२३०. प्राज्ञः** அறிவாளி
- २३१. प्रीतः மகிழ்வுடன் இருப்பவர்
- २३२. प्रियंवदः பிரியமாக பேசுபவர்
- **२३३. प्रातर्दी** (தோஷங்களை) அறவே ஒழிப்பவர்
- २३४. दहयोगी தஹர யோகம் அறிந்தவர்
- २३५. प्रह् : வணங்கிய இயல்பினர்
- **२३६. प्रश्निन्रूपणः** கேள்விகளுக்கு (பதில்களை) நிரூபித்தவர்
- २३७. पारङ्गतः எல்லையை அடைந்தவர்
- २३८. पारामुक्तः பாசத்திலிருந்து விடுபட்டவர்
- २३९. परवित् பரத்தை அறிந்தவர்
- २४०. प्रत्यगोक्षिता உள்நோக்கிய பார்வையுடையவர்
- २४१. अधिष्ठानवित् (ப்ரபஞ்சமாம் தோற்றத்திற்கு) ஆதாரத்தை அறிந்தவர்
- २४२. अव्याजः (அருள்மழைபொழிய) காரணமில்லாதவர்
- २४३. एकवादी ஒரே இறை எனும் வாதத்தை கொண்டவர்
- २४४. द्वयासहः இரட்டையை ஒப்பாதவர்
- २४५. स्वमूः தன்னில் நிலைத்தவர்
- २४६. स्वराट् (மோக்ஷ் நிலையில் தன்னை ஆள பிறர் இல்லாது) தன்னைத் தானே ஆள்பவர்
- २४७. विराट् வியாபித்து ஆள்பவர்
- **२४८. मोनी** மௌனமாய் இருப்பவர்
- २४९. स्वप्रकाशः தானே ஒளிர்பவர்
- २५०. स्वयम्प्रभुः (மற்றொருவரை எதிர்பாராமல்) தாமே திறமிக்கவர்
- २५१. महत् மேன்மை பொருந்தியவர்
- २५२. अरूपः உருவமில்லாதவர்

- २५३. अव्यक्तः (எளிதில்) விளங்காதவர்
- २५४. परं ज्योतिः மிகவும் உயர்ந்த ஜோதியானவர்
- २५५. परं पदम् மிகவும் உயர்ந்த பதவியானவர்
- २५६. परं धाम மிகவும் உயர்ந்த உறைவிடமானவர்
- २५७. परा काष्ठा மிகவும் உயர்ந்த எல்லையானவர்
- २५८. परा शक्तिः மிகவும் உயர்ந்த சக்தியானவர்
- २५९. परा गतिः மிகவும் உயர்ந்த கதியானவர்
- २६०. परम् ओकः மிகவும் உயர்ந்த சேருமிடமானவர்
- **२६१. परं वस्तु** மிகவும் உயர்ந்த பொருளானவர்
- **२६२. परं ब्रह्म** மிகவும் உயர்ந்த பிரம்மமானவர்
- २६३. परं पुरः மிகவும் உயர்ந்து முன்நின்றவர்
- २६४. परायणः மிகவும் உயர்ந்ததை அடைவிப்பவர்
- **२६५. परो भावः** மிகவும் உயர்ந்த த்யானவிஷயமானவர்
- २६६. प्रशान्तात्मा மிகுந்த சாந்தமே சொரூபமானவர்
- **२६७. प्रसाद्कः** திருப்தி செய்பவர்
- २६८. प्रज्ञानघनमूर्तिः ஞானம் தவிர வேறற்ற மூர்த்தியானவர்
- २६९. प्रशास्ता வழிநடத்திச் செல்பவர்
- २७०. प्रत्यगर्थवान् உள்ளிருக்கும் பொருளை அறிந்தவர்
- २७१. विज्ञाता நுண்ணிய அறிவுடையவர்
- २७२. विश्वकृत् உலகை உருவாக்கியவர்
- २७३. वेधाः உலகின் (ஒவ்வொரு அம்சங்களையும்) அமைத்தவர்
- २७४. वेदवेद्यस्ववेभवः வேதத்தினால் மட்டும் அறியத்தக்கதும் தன்னிடம் மட்டும் உள்ளதுமான (தனிப்) பெருமையை உடையவர்
- २७५. सत्यव्रतः சத்தியத்தை விரதமாக கொண்டவர்

- २७६. सत्यपरः சத்தியத்துக்கு அர்ப்பணமானவர்
- २७७. त्रिसत्यः மூன்று காலத்துக்கும் சத்தியமானவர்
- २७८. सत्यनायकः சத்தியத்திற்கு நாயகன்
- २७९. सत्यप्रतिष्ठः சத்தியத்தின் அடிப்படையில் (செயல்படுபவர்)
- २८०. सत्याशीः சத்தியமான வாழ்த்துகள் வழங்குபவர்
- २८१. सत्यार्थप्रेरकः சத்திய ப்ரயோஜனமுடைய காரியங்களை ஊக்குவிப்பவர்
- २८२. समः (அனைத்தையும்) ஸமமாக பார்ப்பவர்
- २८३. इंक्षिता (அனைத்தையும்) கவனித்துக்கொண்டிருப்பவர்
- **२८४. सिचदानन्दस्वरूपः** சத்சித் ஆனந்த வடிவானவர்
- २८५. सद्सत्परः ஸத் அஸத் (இரண்டையும் பிரிப்பதில்) முனைந்தவர்
- २८६. सत्यरूपः சத்தியமே வடிவானவர்
- २८७. सत्यसंस्थः சத்தியத்தில் நன்கு நிலைத்தவர்
- २८८. नगेशः (சிவனார் வடிவில்) மலைக்கு ஈசன்
- २८९. छात्रमानितः மாணவர்களால் கொண்டாடப்படுபவர்
- **२९०. नारदादिनुतः** நாரதர் முதலியவரால் மிகவும் போற்றப்பட்டவர்
- २९१. नम्रः (பகவானை) வணங்கும் சுபாவமுடையவர்
- **२९२. नारीनरनवाकृतिः** பெண்களோ ஆண்களோ (கண்டிராத) அபூர்வ வடிவினர்
- २९३. व्यासजेमिनिवाग्वादी வியாசர் ஜைமினி ஆகியோருடன் வாதம் புரிந்தவர்
- २९४. शारदाविजयी माग्र क्रिक्स வென்றவர்
- **२९५. शमी** அடக்கம் கொண்டவர்
- २९६. सुरेश्वराचार्यदत्तस्वाश्रमः ஸுரேம்வராசார்யருக்கு தனக்கு (நிகரான ஸந்ந்யாஸ) ஆம்ரமத்தை கொடுத்தவர்
- २९७. सूरिकेसरी சிந்தனையாளர்களில் சிம்மம்

- **२९८. अङ्कितादिव्रात्यकृत्यदूरवैदिकवर्त्मकृत्** (சூட்டினால்) முத்திரைகள் தரித்துக்கொள்வது போன்ற சாஸ்த்ரம் தடுத்த செயல்கள் அறவே அற்ற வைதிகமாக பாதையை அமைத்தவர்
- २९९. कुकूलानलकूटस्थकुमारिलकृतानितः உமித்தீக்கூட்டத்தின் இடையே இருந்த குமாரில (பட்டரால்) வணங்கப்பட்டவர்
- ३००. कुतर्ककर्कराक्ष्माभृत्कुलिशः கடினமான மலைகள் போன்ற துஷ்ட வாதங்களை (அழிக்கும்) வஜ்ராயுதமானவர்
- ३०१. कविकेसरी கவி இயற்றுவதில் சிம்மம்
- ३०२. कुवादिमदमत्त्रोभपञ्चास्यः மதம் பிடித்த யானைகள் போன்ற துர்வாதிகளை (வீழ்த்தும்) சிங்கம் போன்றவர்
- **३०३. कलिनाशनः** கலியை நாசம் செய்பவர்
- **३०४. योगरोगहरः** யோகத்தால் நோயை நீக்கியவர்
- ३०५. साञ्चसञ्चावान् ஞான (பாதையை) திரிபற அறிந்தவர்
- **३०६. अमितद्युतिः** அளவற்ற பொலிவுடையவர்
- ३०७. जितजैनप्रतिष्टम्भरतम्भनोच्चाटनामनुः ஜைனர்களின் இடைஞ்சல்கள் மற்றும் ஸ்தம்பன உச்சாடனங்களுக்கான மந்த்ரங்களை முறியடித்தவர்
- **३०८. वैशेषिकविशेषोक्तिविशोषणविचक्षणः** வைசேஷிகர்களின் முக்கியமான கூற்றுகள் வறண்டுபோகும்படி செய்வதில் நிபுணர்
- ३०९. निरस्तद्वेतिमूर्धन्यशैवभागवतागमः தலையாய த்வைதிகளாகிய சைவர்கள் மற்றும் பாகவத மதத்தவர்களின் மாஸ்த்ரத்தை நிராகரித்தவர்
- ३१०. काश्चीनगरनिर्मातृराजसेननृपार्चितः காஞ்சீபுர நகரத்தை (ஆசார்யாளின் ஆஜ்ஞைப்படி மீண்டும்) நிர்மாணம் செய்துகொடுத்த ராஜஸேனன் என்ற அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
- **३११. वरदालयनिर्माता** (ராஜஸேனன் மூலம்) வரதர் ஆலயத்தை (புனர்) நிர்மாணித்தவர்

- **३१२. एकाम्रनाथपदोद्धरः** ஏகாம்ரநாதரின் இருப்பிடத்தை (ஜீர்ண) உத்தாரணம் செய்(வித்)தவர்
- **३१३. गुहास्थिचित्कलाचाण्ड्यखण्डनः** (காமாக்ஷி மூலஸ்தானமாகிய பிலாகாச) குஹையில் இருந்த ஜீவகலையின் உக்ரத்தை நீக்கியவர்
- ३१४. कालखण्डनः (சிவனார் வடிவில்) காலனையே கண்டித்தவர்
- **३१५. कामकोष्ठधराक्रींडः** காமகோஷ்டம் (என்ற புண்ய) பூமியை தன் விளையாட்டு இடமாக கொண்டவர்
- **३१६. कामकोटिपदाश्रयः** (காமாக்ஷியாம்) காமகோடியின் பாதங்களை ஆர்ரயித்தவர்
- **३१७. कामाक्षीवरिवस्याकृत्** காமாக்ஷிக்கு (பலவித) சேவைகளை செய்தவர்
- **३१८. कालहस्तीश्वरार्चनः** காலஹஸ்தீம்வரரை பூஜித்தவர்
- **३१९. क्रुप्तसोपानसुप्रापशेषाचलशिरःपदः** மேஷாசலத்தின் உச்சியை எளிதில் அடைய அனுகூலமான படிக்கட்டை அமைக்கச்செய்தவர்
- ३२०. दिव्यः தெய்வீகமானவர்
- ३२१. दीव्यद्वह्मवर्चसे नमः தெய்வீக பிரம்ம வர்சஸ் உடையவர்
- ३२२. दीनरक्षी தீனர்களை காப்பவர்
- **३२३. द्रापहः** அல்பத்தனத்தை நீக்குபவர்
- **३२४. देवदेवः** தேவர்களுக்கும் தேவர்
- **३२५. दीनबन्धुः** தீனர்களுக்கு உறவினர்
- ३२६. द्यितः அன்பிற்குரியவர்
- ३२७. दीनदेन्यहत् தீனர்களின் தீனத்தன்மையைப் போக்குபவர்
- **३२८. दोषदूरः** தோஷங்களிலிருந்து தூரத்திலிருப்பவர்
- ३२९. दुष्टरिपुः துஷ்டர்களுக்கு எதிரி
- **३३०. दुर्वासःश्लाघितः** துர்வாசரால் சிலாகிக்கப்பட்டவர்

- **३३१. अद्रः** அல்பத்தனம் இல்லாதவர்
- ३३२. द्रविणाद्येषणात्यागी பொருள் முதலியவற்றில் ஆசையை விட்டவர்
- **३३३. दोषज्ञः** குற்றங்களை (விலக்குவதற்காக அவற்றை) அறிந்தவர்
- **३३४. दूरदर्शनः** தொலைவில் உள்ளவற்றை காண்பவர்
- **३३५. दीर्घदर्शी** (வருங்காலத்தை) வெகுமுன்பே பார்க்கவல்லவர்
- ३३६. दोःस्थ्यदूरः மோசமான நிலையை அகற்றுபவர்
- **३३७. दारिद्यदमनः** ஏழ்மையை கட்டுப்படுத்துபவர்
- ३३८. दयी தயை உடையவர்
- **३३९. दिलताशेषधीदोषः** புத்தியில் உள்ள குறைகளை மிச்சமில்லாமல் சிதைப்பவர்
- ३४०. विस्तृताद्वेतवेभवः அத்வைதத்தின் வைபவத்தை விஸ்தாரம் செய்தவர்
- ३४१. क्षेत्राटनकमभ्रान्तकृत्स्त्रभारतमण्डलः க்ஷேத்ராடன முறைப்படி முழு பாரத மண்டலத்தையும் சுற்றியவர்
- ३४३. बद्रीनारायणपदाश्रयः பத்ரிநாராயணரின் பாதங்களை ஆசிரயித்தவர்
- ३४४. कामरूपार्चनः காமரூபம் (அஸ்ஸாமில் உள்ள தேவியை) அர்ச்சித்தவர்
- ३४५. अकामः காமம் இல்லாதவர்
- ३४६. काश्मीरेश्वरसेवकः காச்மீரத்தில் ஈசனுக்கு சேவை செய்தவர்
- ३४७. अवन्तीद्वारकायोध्यामायाकाञ्चीमहीप्रियः அவந்தீ த்வாரகா அயோத்யா மாயா காஞ்சீ ஆகிய க்ஷேத்ரங்களை விரும்பியவர்
- **३४८. कालीघट्टहरिद्वारजम्बुदेवीप्रयागगः** காளிகட்டம், ஹரித்வார், ஜம்பு (ஜம்மு) தேவி, பிரயாகை ஆகியவற்றுக்குச் சென்றவர்
- **३४९. श्रीशेलेशजगन्नाथपुरुषोत्तमभीमगः** ஸ்ரீசைல ஈசன், ஜகந்நாதம், புருஷோத்தமம், பீம (சங்கர க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்

- ३५०. त्र्यम्बकोज्जयिनीविन्ध्यवासिनीसेवनापरः த்ர்யம்பகம், உஜ்ஜயினி, விந்த்யவாசினி (க்ஷேத்ர தெய்வங்களை) ஆர்வத்துடன் வணங்கியவர்
- ३५१. सेतुकन्याकुमारीगः சேது, கன்யாகுமரி (க்ஷேத்ரங்களுக்கு) சென்றவர்
- ३५२. जनार्दनजनार्तिहा ஜனார்த்தன (க்ஷேத்ரத்தில் இருந்த) ஜனங்களின் கஷ்டத்தைத் தொலைத்தவர்
- ३५३. अनन्तपुरवेयाघ्रवृषाचलपदाश्रयः திருவநந்தபுரம், வ்யாக்ர (க்ஷேத்ரம்) மற்றும் திருச்சூரை நாடியவர்
- ३५४. कालटीकलभः காலடியில் (பிறந்த ஞான புஷ்டியுடன் கூடிய) யானைக்குட்டி
- ३५५. कल्यः (காரியங்கள் செய்வதில்) திறமிகுந்தவர்/முனைந்தவர்
- ३५६. सरःशरझरीचरः குளங்கள், (அவற்றின் கரைகளில் அடர்ந்திருக்கும்) புல்லுகள், நீர்வீழ்ச்சிகள் (இடையே) ஸஞ்சரித்தவர்
- ३५७. कृत्स्नकर्णाटपाण्ड्यान्ध्रचेरचोलमहीचरः கர்ணாடகம், ஆந்த்ரம், பாண்டியம், சேரம் மற்றும் சோழ நாடுகள் அனைத்திலும் ஸஞ்சரித்தவர்
- **३५८. श्रीनीपतित्वन्यग्रोधछायाश्वेतवनाश्रयः** வில்வவனம் (வைகாவூர்), நீபவனம் (ஆலவாய்), தில்லைவனம் (சிதம்பரம்), ஆலங்குடி, சாயாவனம் (சாய்க்காடு), வெண்காடு (ஆகியவற்றை) நாடியவர்
- ३५९. मान्यश्रीरङ्गमधुरार्जुनशायिपुराश्रयः மதிக்கப்பெறும் ஸ்ரீரங்கம், மதுரை, மருதூர், வில்லிபுத்தூரை நாடியவர்
- **३६०. अखिलाण्डेश्वरीरत्नताटङ्गन्यस्तयन्त्रराट्** அகிலாண்டேஸ்வரிக்கு ரத்ன தாடங்கமாக யந்திர ராஜமாகிய (ஸ்ரீசக்ரத்தை) அணிவித்தவர்
- **३६१. काञ्चीगृहाच्छद्न्यस्तचकराजपरिस्तरः** காஞ்சீ (க்ஷேத்ர பிலாகாசமாகிய) குஹையை மூடும்படி (ஸ்ரீ)சக்ர ராஜத்தை மூடியாக வைத்தவர்
- **३६२. भूम्यप्तेजोनिलाकाशिलक्षसेवाधृतादरः** பூமி, ஜலம், தேஜஸ், காற்று, ஆகாசம் (ஆகிய பஞ்ச பூத க்ஷேத்ரங்களான காஞ்சீ, திருவானைக்கா,

- திருவண்ணாமலை, காளஹஸ்தி, சிதம்பரம் இங்குள்ள) லிங்கங்களை ஸேவிப்பதில் ஆதரவு கொண்டவர்
- **३६३. सत्यव्रतस्थलस्थायी** സத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) க்ஷேத்ரத்தில் வஸித்தவர்
- **३६४. कामकोटिमठास्पदः** காமகோடி மடத்தை நிலைப்பிடமாக கொண்டவர்
- **३६५. चिदम्बरसभान्यस्तमोक्षित्रः** சிதம்பர സபையில் மோக்ஷ லிங்கத்தை வைத்தவர்
- ३६६. अलिङ्गकः (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாக) தனிப்பட்ட அடையாளம் இல்லாதவர்
- **३६७. ऋश्यशृङ्गाश्रमन्यस्तभोगिलङ्गः** ருஷ்யசிருங்கர் ஆச்ரமத்தில் போக லிங்கத்தை வைத்தவர்
- ३६८. ऋतम्भरी (உலகெங்கும் பரவியிருக்கும் ஸத்யத்தை அறிவதற்கான) ருதம்பரா (ப்ரஜ்ஞை எனப்படும் ஞானத்தை) கொண்டவர்
- **३६९. शारदामान्यसन्देशः** சாரதையால் மதிக்கப்பட்ட (நீ பூமியில் ஆங்காங்கு இருந்து மக்களுக்கு அருள வேண்டும் என்ற) வேண்டுகோளை விடுத்தவர்
- **३७०. सर्वज्ञः** எல்லாம் அறிந்தவர்
- **३७१. सर्वपापनुत्** எல்லா பாபங்களையும் நீக்குபவர்
- ३७२. **शारदामठसङ्कृप्तशारदापीठपावनः** சாரதையின் நிற்பிடத்தில் சாரதா பீடத்தை நிறுவி பவித்ரமாக்கியவர்
- **३७३. शारदास्थापनापूतऋश्यशङ्गगिरिस्थलः** சாரதையை ஸ்தாபித்ததால் ருச்யச்ருங்ககிரியை சிறப்படையச்செய்தவர்
- ३७४. अशरीरवचोव्यूढकामकोटिमठिस्थितिः அசரீரியின் சொல்படி காஞ்சி மடத்தை நிறுவி வளர்த்தவர்
- ३७५. कामकोटिमहापीठमध्यदृश्यमहामणिः காமகோடி மஹா பீடத்தில் காணப்பட்ட பெரிய மணியைப் போன்றவர்
- ३७६. कालघः (சிவனார் வடிவத்தில்) யமனை அடக்கியவர்

- **३७७. कामधुक्** விரும்பிய (பலன்களை) அளிப்பவர்
- ३७८. कान्तः அன்பிற்குரியவர்
- ३७९. **शारदाजेत्रवाङ्मुखः** சாரதையையே ஜயிக்கும் வாக்கை வாயில் கொண்டவர்
- ३८०. कामकोटिधरागोष्ठी காமகோடி பூமியை தனது கொட்டில் போல் (இருப்பிடமாக) கொண்டவர்
- **३८१. कर्मन्दिकुलशेखरः** шதிகளின் குழாமுக்கு தலையாயவர்
- ३८२. शिष्यसङ्घपरज्ञानव्रततीदोहद्प्रदः சிஷ்யர்கள் கூட்டத்திற்கு பர (வஸ்துவின்) ஞானமாகிய கொடி (வளருவதற்கான) ஊட்டச்சத்தை அளிப்பவர்
- **३८३. मठाम्नायमहाम्नायसेतुकेरलधर्मकृत्** மடங்களின் ஆம்நாய (ஸம்ப்ரதாயங்களைத் தெரிவிக்கும்) பெரியதான ஆம்நாய ஸேது என்ற கேரள (தேசத்தில் ப்ரஸித்தமான?) நூலை யாத்தவர்
- ३८४. पुर्यन्ततीर्थप्रमुखिराष्यागमविवेचनः தீர்த்த முதல் புரீ வரையிலான சிஷ்ய ஸம்ப்ரதாயங்களைப் பாகுபடுத்தியவர்
- **३८५. आनन्देन्द्राभिधापूर्वसरस्वत्याह्वयागमः** (அதில்) ஸரஸ்வதீ என்பதற்கு முன்பு ஆநந்த இந்த்ர (என்ற இரு) பதங்களும் (தனித்தனியே பயன்படுத்தப்படுவதற் முறையையும் (வகுத்தவர்)
- **३८६. आनन्दमयजानन्दिवाग्जयख्यातवाक्पदः** ஆநந்தமய (அதிகரண தெளிவாக்கத்தால் லௌகிக) ஆநந்தமே ப்ரஹ்மம் (என்று சொல்பவர்களை) ஜயித்து புகழ்பெற்ற சொல்லாண்மையை உடையவர்
- **३८७. योगेश्वरार्चानिरतः** யோகேஸ்வரரை ஆராதிப்பதில் முனைந்தவர்
- **३८८. योग्यः** யோக்யதை உடையவர்
- ३८९. योगविदां वरः யோகம் அறிந்தவர்களில் சிறந்தவர்
- **३९०. सुस्थितः** சௌக்கியமாக இருப்பவர்
- **३९१. सुस्थिरः** அசைக்க முடியாதவர்

- ३९२. स्त्रिग्धः மென்மையானவர்
- **३९३. स्थास्तुः** அழியாதவர்
- ३९४. स्थेमा உறுதித்தன்மையே (வடிவமானவர்)
- ३९५. स्थितिप्रदः (தன் சுய) நிலையில் (உறுதியாக நிற்கும் தன்மையை) அருள்பவர்
- **३९६. सत्यव्रतपद्प्राप्तब्रह्मीभावः** (அவதார இறுதியில்) ஸத்யவ்ரதம் (எனப்படும் காஞ்சீ) க்ஷேத்ரத்தில் ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றியவர்
- ३९७. अशरीरवान् உடலற்றவர் (உடலில் அபிமானம் அற்றவர்)
- ३९८. दुस्तरापारसंसारपारतारणकृत्तरिः தாண்டுவதற்கரியதான எல்லையற்ற(தாகத் தோன்றும்) ஸம்ஸாரத்தின் எல்லைக்கு சேர்ப்பிக்கும் படகானவர்
- ३९९. कृत्तारिवर्गसंशान्तस्वान्तलक्ष्यस्ववेभवः (காமம் க்ரோதம் முதலிய) எதிரிக்கூட்டங்களை அறுத்ததால் சாந்தமடைந்த மனதினால் (ப்ரஹ்ம ஸ்வரூபமாகிய) தன் பெருமையை அறியக்கூடியவர்
- **४००. अनातुरः** சோர்வில்லாதவர்
- ४०१. अतुलितः ஒப்பிட முடியாதவர்
- ४०२. **सद्वृत्तः** நன்னடத்தை உடையவர்
- ४०३. साधुदर्शनः தரிசனம் செய்ய உகந்தவர்
- ४०४. षड्रानीपारदश्वा (ந்யாயம் முதலிய) ஆறு தரிசனங்கள் (என்ற சாஸ்த்ரங்களில்) கரைகண்டவர்
- ४०५. षडध्वातीतमानसः (வர்ணம் பதம் முதலியதாக உபாஸனா மாஸ்த்ரங்களில் சொல்லப்படும்) ஆறு பாதைகளையும் கடந்த (ப்ரஹ்மத்தில் ஒன்றிய) மனதை உடையவர்
- ४०६. अदोषः குற்றமில்லாதவர்
- **४०७**. दुर्जयः வெல்ல இயலாதவர்
- **४०८. अटूनः** தாபப்படாதவர்

- ४०९. दुर्घर्षः மிரளச்செய்யவியலாதவர்
- ४१०. अपुनर्भवः மீண்டும் பிறவாதவர்
- ४११. **शुद्धः** मुंडु प्राज्या विकास
- ४१२. बुद्धः தன் சொருபத்தை அறிந்தவர்
- ४१३. प्रबुद्धात्मा விழிப்படைந்த ஆத்மாவானவர்
- **४१४. सिदः** (பிறவி) பயன்பெற்றவர்
- ४१५. प्रेद्धः பலமான (ஞான) ப்ரகாசமுடையவர்
- ४१६. **समुद्धरः** ஆபத்துகளில் இருந்து மீட்டெடுப்பவர்
- ४१७. समिद्धः (சம தமாதி குணங்களால் ஞானத்தீ) நன்கு ஓளிரப்பெற்றவர்
- **४१८. प्रतिभाविद्धः** (சமயோசித புதிய யோசனைகள் வரக்கூடிய) அறிவுக்கூர்மை நிறைந்தவர்
- ४१९. सार्जः சாரத்தை அறிந்தவர்
- **४२०. सर्वशास्त्रवित्** எல்லா சாஸ்த்ரங்களையும் அறிந்தவர்
- ४२१. सुधास्वादुवचाः அமுதமனைய இனிய மொழியினர்
- **४२२. सूक्ष्ममितिः** சூக்கும அறிவுள்ளவர்
- ४२३. मोहतमोरविः மோகமென்னும் இருளுக்கு சூரியன் போன்றவர்
- ४२४. महायशाः பெரும் புகழ்கொண்டவர்
- ४२५. महाशीलः பெரும் ஒழுக்கத்தை கொண்டவர்
- ४२६. महौजाः பெரும் காரியத்திறன் பெற்றவர்
- **४२७. महामुनिः** பெரும் முனிவர்
- ४२८. महनीयः மதிக்கத்தக்கவர்
- ४२९. महासत्त्वः பெரும் (ஆத்ம) பலத்தை கொண்டவர்
- ४३०. माननार्हः மரியாதைக்கு உரியவர்

- **४३१. महार्थवित्** பெரும்பொருளை அறிந்தவர்
- ४३२. मायातत्त्ववित् மாயா தத்துவத்தை அறிந்தவர்
- **४३३. अव्यग्रः** பதட்டமில்லாதவர்
- ४३४. महीमण्डलपण्डितः பூ மண்டலத்தில் (தலைசிறந்த) பண்டிதர்
- **४३५. मातृकृत्यासाह्यकर्मशासकेरलभूसुरः** தாயாரின் க்ருத்யத்திற்கு ஒத்தாசை செய்யாத கேரள ப்ராஹ்மணர்களுக்கு சாபம் அளித்தவர்
- **४३६. यथाप्रतिश्रवाचीर्णस्मृतमातृप्रतिश्रुतिः** நினைத்தவுடன் (வருவேன் என்ற) தாயிடம் செய்த ப்ரதிஜ்ஞையை சொல்லியவண்ணம் செய்தவர்
- ४३७. रवीन्दुदक् (சிவனார் வடிவில்) ஸூர்யனையும் சந்த்ரனையும் கண்களாகக் கொண்டவர்
- **४३८. दोर्मन्थोत्थाग्निसन्दीपिताम्बिकः** தோளைக் கடைந்ததால் உருவான அக்னியால் தாய்க்கு தீயளித்தவர்
- ४३ ९. रस्जः ரஸமான (பரம்பொருளை) அறிந்தவர்
- ४४०. रसिताम्नायः வேத மாஸ்த்ரங்களின் சுவையை அறிந்தவர்
- **४४१. रागद्वेषहरः** ஆசை துவேஷம் ஆகியவற்றை நீக்குபவர்
- **४४२. महत्** மகத்தானவர்
- **४४३. राजयोगी** ராஜ யோகி
- ४४४. **आप्तकामः** விரும்பியதை அடைந்தவர்
- **४४५. निराशः** ஆசைகள் இல்லாதவர்
- **४४६. मातृवत्सलः** அன்னை போன்ற அன்புடையவர்
- ४४७. कामतन्त्रकलास्यर्थकायान्तरिनवेशनः காம மாஸ்த்ர கலையை அறிய (ஒரு இறந்த அரசனின் சரீரத்தில்) பரகாய ப்ரவேசம் செய்தவர்
- ४४८. काव्यरतिविनर्माणलब्योदात्तकविप्रथः (அவ்வடிவில்) சிறந்த காவ்யத்தை நிர்மாணித்ததால் உயர்ந்த கவி என்ற புகழைப் பெற்றவர்

- ४४९. माधुर्यधुर्यफणितिः இனிமையில் முன்னிற்கும் சொற்களைக் கொண்டவர்
- ४५०. **मधुराधीशमानितः** மதுரையை (ஆண்ட) அரசனால் மதிக்கப்பட்டவர்
- ४५१. ज्योतिः पुरेशविनुतः ஜ்யோதிபுரத்தின் அரசனால் வணங்கப்பட்டவர்
- ४५२. पारेजयपुरस्थितिः ஐயபுரத்துக்கு அப்பாலும் வசித்தவர்
- ४५३. विरूपाक्षस्थलासेवी விரூபாக்ஷ தலத்தில் நெடிது தங்கியவர்
- ४५४. विजयाख्यपुरीचरः விஜயபுரத்திற்கு (விஜயம்) செய்தவர்
- ४५५. विदिशादेशविह्नतिः விதிமா தேசத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
- ४५६. विश्वनाथपद्प्रियः விம்வநாதபுரியான (காசியை) விரும்பியவர்
- ४५७. पाटलीपुत्रसंस्थानः பாடலிபுத்திரத்தில் தங்கியவர்
- ४५८. विष्णुपादप्रसेवनः (கயா) விஷ்ணுபாதத்தை நன்கு சேவித்தவர்
- ४५९. गयावटद्रमूलस्थः கயாவில் ஆலமரத்தடியில் தங்கியவர்
- ४६०. भद्राचलनिरूढधीः பத்ராசலத்தில் ஆழ்ந்த அபிமானமுள்ளவர்
- ४६१. वृन्दावनान्तसञ्चारी பிருந்தாவன பகுதியில் சஞ்சரித்தவர்
- ४६२. व्यासाचलबिलाश्रयः ഖ്യാസാലം குஹையையும் அண்டியவர்
- ४६३. ओङ्कारकुण्डविह्रतिः ஓங்கார குண்டத்தில் மகிழ்ந்திருந்தவர்
- ४६४. मिल्लकार्जुनमय्रधीः மல்லிகார்ஜுனத்தில் ஆழ்ந்துள்ள மனத்தினர்
- **४६५. श्रीपञ्चनद्पञ्चास्यशिष्यषण्डनिषेवितः** திருவையாற்றில் சிவபெருமானின் அடியார்கள் குழுவினால் வணங்கப்பட்டவர்
- ४६६. अहोबिलगुहारामः அஹோபில குகையில் ஓய்வெடுத்தவர்
- **४६७. कमलाक्षः** தாமரைக்கண்ணர்
- **४६८. कलानिधिः** கலைகளுக்கு இருப்பிடமானவர்
- **४६९. कलिध्वंसी** கலியை துவம்சம் செய்பவர்
- ४७०. **कामरूपः** தன்னிச்சையில் உருவை மாற்றிக்கொள்ளக்கூடியவர்

- ४७१. कामचारः விரும்பிய இடத்திற்கு செல்லவல்லவர்
- ४७२. कलामयः கலைகளே வடிவமானவர்
- ४७३. परमेष्ठी பரம்பொருளில் நிலைத்தவர்
- ४७४. वराप्राणः ப்ராணனை வசப்படுத்தியவர்
- ४७५. कामाक्षीसेवनोत्सुकः காமாக்ஷியை சேவிக்க விரும்பியவர்
- **४७६. प्राणदः** உயிர் அளிப்பவர்
- **४७७. प्रणयी** அன்பிற்குரியவர்
- ४७८. पुष्टः வலுவானவர்
- ४७९. सर्वतन्त्रधीः எல்லா சாஸ்த்ரங்களிலும் ஸ்வதந்த்ரமாக ஸஞ்சரிக்கவல்ல புத்தியைக் கொண்டவர்
- ४८०. स्वतन्त्रात्मा ஆத்ம தளைகளற்றவர்
- ४८१. नास्तिकान्तकृत् நாஸ்திகர்களுக்கு முடிவுகட்டியவர்
- ४८२. प्रधीः மிக்க புத்திமான்
- ४८३. आसनाध्ववित् (Сштв) ஆஸன மார்க்கத்தை அறிந்தவர்
- ४८४. द्रग्धक्षपणकोत्सेधः ജൈனர்களின் அத்துமீறல்களை பொசுக்கியவர்
- ४८५. दाक्षिण्यनिधिः பெருந்தன்மைக்கு இருப்பிடமானவர்
- ४८६. अक्षतः பாதிக்கப்படாதவர்
- ४८७. दक्षः சாமர்த்தியமானவர்
- **४८८. दक्षिणदिक्सिद्धः** தென் திசையிலிருந்து (வந்த) ஸித்தர்
- ४८९. कालत्रयवित् முக்காலமும் அறிந்தவர்
- ४९०. आस्तिकः இறை நம்பிக்கையாளர்
- ४९१. आदेष्टा கட்டளை பிறப்பிப்பவர்
- ४९२. अपोरुषः சாதரண மனிதனினும் அதிக சக்தி உடையவர்

- **४९३. ध्वस्तकापालिकमतकमः** காபாலிக மத வழிமுறைகளை த்வம்ஸம் செய்தவர்
- **४९४. कामिनीविमुखः** (லௌகிக) ஆசைகளில் ஈடுபட்ட பெண்களிடம் பாராமுகமானவர்
- ४९५. काम्यः நண்பனாக கருதத்தக்கவர்
- ४९६. कर्मत्यक् கர்மானுஷ்டானங்களின் பலனை எதிர்பாராதவர்
- ४९७. कार्मणः கர்மானுஷ்டானங்களுக்கு ஹிதமானவர்
- ४९८. कृती செய்யவேண்டியவற்றை செய்துவிட்டவர்
- ४९९. कल्याणगुणशीलः கல்யாண குணங்களை உடையவர்
- ५००. कियामुक्तः செயல்களிலிருந்து விடுபட்டவர்
- ५०१. कृपाघनः கிருபையால் நிறைந்தவர்
- **५०२. कीर्तिमान्** புகழுடையவர்
- **५०३. कृतयोगेशपूजात्रातजगज्जनः** யோக லிங்க பூஜையை செய்தமையால் உலக மக்களைக் காத்தவர்
- ५०४. धिम्मिल्लपुरराज्यश्रीबालार्चननृपार्चितः தம்மில்லபுரம் என்ற ராஜ்யத்தில் பாலா (த்ரிபுரஸுந்தரியை) அர்ச்சிக்கும் அரசனால் பூஜிக்கப்பட்டவர் (?)
- ५०५. वेदान्तभास्करः வேதாந்தத்தில் சூரியன் போன்றவர்
- **५०६. ज्ञानचन्द्रः** ஞானத்தில் சந்திரன் போன்றவர்
- ५०७. ऐश्वर्यवारिधिः சகல ஐஸ்வர்யங்களையும் பொழிபவர்
- **५०८. नेपालदेशभूपालवृषदेवोपदेशकृत्** நேபாள தேச அரசனான வ்ருஷ தேவனுக்கு உபதேசித்தவர்
- ५०९. केलासकूटसङ्कृप्तपशुपत्यर्चनाविधिः கைலாஸ பர்வதத்தில் சிவனை பூஜிக்கும் வழிமுறை வகுத்தவர்
- ५१०. सौगतवातनिष्कासपटुः புத்தமதக்கூட்டத்தை நீக்குவதில் திறம்பெற்றவர்

- **५११. वैराग्यबोधकः** வைராக்யத்தை போதிப்பவர்
- ५१२. सुधीमणिः அறிவாளிகளுக்குள் மணி போன்றவர்
- ५१३. दिव्यदर्शी தெய்வீக (ஞான) த்ருஷ்டி உடையவர்
- **५१४. देवदेन्यहत्** (பூமியில் அதர்மம் பெருகியதால் ஏற்பட்ட) தேவர்களின் வருத்தத்தை அகற்றியவர்
- **५१५. अभ्रमः** குழப்பம் இல்லாதவர்
- **५१६. प्रसन्नकमलादत्तद्रिब्राह्मणीनिधिः** ப்ரஸன்னமடைந்த லக்ஷ்மியால் ஏழை அந்தணப்பெண்ணுக்கு செல்வம் கொடுப்பித்தவர்
- ५१७. सम्फुल्लकुसुमप्रख्यमन्दमन्दिस्मताङ्करः முழுதும் மலர்ந்த பூவனைய மெல்லிய அரும்பு போன்ற புன்முறுவலை உடையவர்
- **५१८. चिन्मुद्रापरिधूतान्तेवासिपुङ्गवसंशयः** சிந்முத்ரையாலேயே தலைசிறந்த சீடர்களின் சந்தேகங்களை விரட்டியவர்
- ५१९. हरिहारिवचोहासभस्मसात्कृतभैरवः (நரஸிம்ஹரின் மனமுவக்கும் வாக்கின்படி) சிங்கத்தில் பயங்கர குரலாகிய அட்டஹாஸத்தால் பஸ்மமாகிய காபாலிகனுக்கு (உடலைக்கொடுக்க முன்வந்தவர்)
- **५२०. समाश्रितसुधन्वात्तपादुकानित्यपूजनः** தன்னை அண்டிய ஸுதன்வா (என்ற அரசனால்) தமது பாதுகைகளுக்கு நித்ய பூஜை செய்யப்பெற்றவர்
- ५२१. नमःशेषी நமஸ்காரங்களையெல்லாம் பெறத்தகுந்தவர்
- ५२२. नामपरः (பகவானின்) நாமங்களை முக்கியமாகக் கொண்டவர்
- **५२३. निन्दिताशेषविष्टपः** தேவ லோகம் முழுவதும் மகிழுற வைத்தவர்
- ५२४. एकदण्डी ஒரு தண்டம் உடைய (ஸந்ந்யாஸ ஸம்ப்ரதாயத்தைச்) சேர்ந்தவர்
- **५२५. कषायी** கஷாயம் தரித்தவர்
- ५२६. मुण्डी (தலையை) முண்டனம் செய்து கொண்டவர்
- **५२७. खण्डितसोगतः** பௌத்தத்தை கண்டித்தவர்

- **५२८. दिगम्बरादिदुः सिद्धसिद्धान्तविनिबर्हणः** சித்தர்கள் என்று (தம்மைத்தாமே சொல்லிக்கொள்ளும்) திகம்பரர்களின் சித்தாந்தங்களை நசுக்கியவர்
- **५२९. महिकाश्वेतद्शनः** மல்லிகைகளைப் போன்ற வெண்ணிற பற்களை உடையவர்
- ५३०. महिलादूरमानसः பெண்களின் நினைப்பிலிருந்து மிகவும் விலகியவர்
- **५३१. कामारिम्**तिः காமத்தின் எதிரி வடிவானவர்
- ५३२. कुतुकी ஆநந்தமும் உத்ஸாஹமும் கொண்டவர்
- ५३३. कमनीयगुणाकरः விரும்பத்தக்க குணங்கள் இருக்கும் சுரங்கம் போன்றவர்
- **५३४. सोमोद्भवातटीक्नृप्तसोम्यगोविन्द्सेवनः** (சந்த்ரனிலிருந்து உருவான) நர்மதா நதிக்கரையில் ப்ரஸந்நமான கோவிந்த (பகவத்பாதருக்கு) ஸேவை செய்தவர்
- **५३५. मालिकाप्रियचालुक्यराजपूजितविग्रहः** மாலிகாப்ரியன் என்ற சாளுக்ய அரசனால் (கனகாபிஷேகாதிகளால்?) உடல் முழுதும் பூஜிக்கப்பட்டவர்
- **५३६. अत्याश्रमवरिष्ठः** (நான்கு) ஆச்ரமங்களை தாண்டிய நிலையை அடைந்தவர்களில் தலைசிறந்தவர்
- ५३७. श्रीः (ஞானமாகிய நீங்காத) செல்வமாக (தாமே ஆனவர்)
- ५३८. श्रितकल्पद्रुमः அண்டியவர்களுக்கு கற்பக வருக்ஷமானவர்
- **५३९. अश्रमः** களைப்பற்றவர்
- ५४०. मरुद्ध्याजलस्त्रायी காற்றினால் தூண்டப்பட்ட (அலைகள் கொண்ட நதிகளில்) ஸ்நானம் செய்தவர்
- **५४१. घटोद्भवसुदर्शनः** (காலடியில்) கும்பமுனியை தரிசித்தவர்
- ५४२. स्वयंविनम्रवृक्षाग्रशाखार्पितफलाशनः தாமாகவே குனிந்து மரங்களின் நுனிக்கிளைகள் அர்ப்பணித்த பழங்களை உண்டவர்
- **५४३. वर्षद्वलाहकोन्मुक्तनीरासाराध्वमध्यगः** பொழியும் மேகங்கள் கொட்டும் நீர்ப்பெருக்குடன் (கூடிய) பாதைகளில் (பாதிப்பின்றி) செல்பவர்

- **५४४. समुज्ज्वलद्वज्वालाद्त्तवीथीवनाश्रयः** கொழுந்துவிட்டெரியும் காட்டுத்தீ (விலகி) அளித்த பாதையால் காட்டை அடைந்தவர்
- ५४५. **रारारुमृगनिर्व्यूटसरणीयसृतिक्रमः** ஹிம்ஸிக்கக்கூடிய மிருகங்கள் (தாமே) விலகியளித்த செல்லவேண்டிய பாதைகளில் ஸஞ்சரித்தவர்
- ५४६. सदानुकूलपवनः காற்றினால் எப்போதும் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
- ५४७. वसिष्ठः (நீங்காத) செல்வம் உடையவர்களில் சிறந்தவர்
- ५४८. वाग्यतः மௌனமாக இருப்பவர்
- ५४९. वरः मीळां हु वा रं
- ५५०. समीभवत्समुत्पातः (செல்லும் பாதையில் அந்தந்த ஊர்மக்களின் வினையால் ஏற்பட்ட) அமுப அடையாளங்கள் தாமே அடங்கப்பெற்றவர்
- ५५१. पांसून्मुक्तपथान्तरः தூசிகளற்ற (சுத்தமான) பாதைகளில் சென்றவர்
- ५५२. तुषारशीकरस्पृष्टिश्चष्टिपिष्टादनिकयः பனி (அல்லது நதி/மழை நீர்) தெறித்துபட்டதனால் மிருதுவான (சத்து) மாவை (மட்டும்) சாப்பிடுவதை வழக்கமாகக் கொண்டவர்
- ५५३. मकरन्द्झरीमान्यमधुरोक्तिः மகரந்தத் (தேன்) வழிவது போல் மதிக்கத்தக்க இனிமையான சொற்கள் கொண்டவர்
- **५५४. महाकविः** பெரும் புலவர்
- ५५५. कमण्डलूद्रकोडीकृतकछोलिनीझरः அலைபுரளும் (நர்மதா) நீர்ப்பிரவாஹத்தை கமண்டலுவுக்குள்ளே அடக்கியவர்
- **५५६. अमृष्टभस्मक्किन्नांशुकान्तनीरचरस्थितिः** (நீரில் இறங்கியும்) அழியாத திருநீறும் நனைந்த வஸ்த்ரத்தின் நுனிப்பகுதியில் மீன்களும் கூடியவர்
- **५५७. वेलाधामव्युद्स्ताब्धिः** எல்லைக் கரையில் ஸமுத்ரத்தை விரட்டியவர் (கதை தேட வேண்டும்)
- ५५८. मृतसञ्जीवनेक्षणः இறந்தவர்களை உயிர்ப்பிக்கவல்ல பார்வையை உடையவர் (கோகர்ணத்தில் அவ்வாறு ஆசார்யாள் செய்ததாக சரித்ரம்)

- ५५९. महाव्याधिप्रशमनः பெரும் வியாதிகளை குணமாக்குபவர்
- **५६०. मद्घः** செருக்கை அழிப்பவர்
- **५६१. मृगवश्यकृत्** மிருகங்களை தன்வசம் கொண்டவர்
- **५६२. जडकुड्डादिसम्भाषी** ஜடம் கூன் உடையவர் முதலியோரிடமும் (கருணையுடன்) ஸம்பாஷித்தவர் (ஹஸ்தாமலகர் ஜடம் போல் காட்சியளித்தவர்)
- **५६३. लतापुष्पकृतार्चनः** கொடிகளிலிருந்து (தானாக உதிர்ந்த) பூக்களால் அர்ச்சனை செய்தவர்
- **५६४. सोवस्तिककोष्टुबृन्दः** (காட்டுப்பகுதிகளில் ஸஞ்சரிக்கையில்) ஓநாய்க்கூட்டங்கள் முன்செல்லப்பெற்றவர்
- **५६५. सौखसुप्तिककोशिकः** (இரவில்) உறங்கவில்லையா என்று ஆந்தைகளால் கேட்கப்பெற்றவர்
- **५६६. सौप्राभातिककाकोलः** (காலையில்) காக்கைகளால் ஸுப்ரபாதம் பாடப்பெற்றவர்
- **५६७. सौखासनिकपन्नगः** (பாறைகள் முதலியவற்றிலிருந்து விலகி) சௌகரியமாக அமர ஸர்ப்பங்களால் ஆஸனம் அளிக்கப்பட்டவர்
- **५६८. सौखगायनकृद्धेकः** (மழைக்காலத்தில்) இனிய பாடகர்களின் கோஷ்டியை உருவாக்கும் தவளைகளால் (உபசரிக்கப்பட்டவர்)
- **५६९. सौवातिथ्यकपुष्पिलट्** தேனீக்களால் (தேனாகிய மதுபர்க்கம் அளித்து) அதிதி உபசாரம் செய்யப்பட்டவர்
- ५७०. सौवागतिकशार्दूलः புலிகளால் வரவேற்பு சொல்லப்பெற்றவர்
- ५७१. सौरवोन्मृष्टिकवृश्चिकः (பாறை முதலியவற்றிலிருந்து எழுந்துகொள்ளும்போது அப்பால் சென்று விழுவதால்) தேள்களால் சரியாக உதறிக்கொண்டீரா என்று நிர்சயம் செய்விக்கப்பட்டவர்
- **५७२. सौस्नातिकप्रस्रवणः** நீர்வீழ்ச்சிகளில் நன்கு நீராடியவர்
- ५७३. सौवभ्यञ्जनिकाम्बुदः மேகங்களால் எண்ணெய் தேய்த்துக்கொள்வது போல் (உடலைப் பளபளக்கவைக்கும் மழை) பொழிவிக்கப்பட்டவர்

- ५७४. सौवीजितिकवातूलः பெருங்காற்றுகளால் நன்று விசிறிவிடப்பட்டவர்
- ५७५. सोवनातिपकद्रुमः மரங்களால் வெயிலிலிருந்து நன்கு பார்த்துக்கொள்ளப்பட்டவ
- ५७६. सौवासितिकपञ्चास्यः ஸிம்ஹங்களைப் போல் (கம்பீரமாக) அமர்பவர்
- **५७७. सौवन्धिसकवाहसः** மலைப்பாம்புகளைப் போல் (ஒரு முறை) போதுமான அளவு உண்டு (வெகு காலம் த்ருப்தியுடன்) இருப்பவர்
- ५७८. सौविहासिकमत्तेभः மதம்பிடித்த யானைகளனைய அழகிய புன்முறுவல் உடையவர்
- ५७९. सौवध्युषितकृदुहः குஹைகளில் ஸுகமாக தங்கியவர்
- ५८०. सोप्रस्थितककान्तारः (ஆங்காங்கு) எளிதில் கிளம்பி போவதற்கு பெருங்காட்டினால் (நல்ல பாதை அளிக்கப்பட்டவர்)
- ५८१. सौशाकुनिकमौकलः காக்கைகளால் சுப சகுனமாக கரையப்பெற்றவர்
- ५८२. सौवापीतिकवेशन्तः குளங்களில் த்ருப்தியாக நீர் பருகியவர்
- ५८३. सौजिंग्धिकफलेग्रहिः பழுத்த மரங்களினால் நன்கு உண்டவர்
- **५८४. सोविलिप्तिकभूधूलिः** பூமி தூசி (உடல்முழுதும் சந்தனம்போல்) நன்கு பூசப்பெற்றவர்
- ५८५. सौवस्त्रकपटचरः கந்தராடையை உயர்ந்த வஸ்த்ரம் போல் தரிப்பவர்
- ५८६. सौजापितिकभल्लूकः ஜபங்கள் நன்கு நடக்கின்றனவா என்று (விசாரிப்பதுபோல் இடையூறு செய்யாமல்) கரடிகள் அப்பால் செல்லப்பெற்றவர்
- ५८७. सौवधीतिकचातकः சாதக (பறவைகள் குரல் கொடுப்பதால்) பாராட்டப்பட்ட (உபநிஷத் முதலிய) உயர்ந்த பாராயணம் செய்தவர்
- **५८८. सौसंविष्टिकगोपुच्छः** நன்கு உறங்கினீர்களா என்று குரங்குகளால் (வந்து விசாரிக்கப்பட்டவர்)
- ५८९. सौवुद्गीतिककोकिलः அழகிய பாட்டுகளால் குயில்களால் போற்றப்பட்டவர்

- **५९०. सौखप्रबुद्धिकश्वावित्** (காலையில் இங்குமங்கும் ஸஞ்சரிக்கையில்) முள்ளம்பன்றிகளால் (எங்கள் மேல் மோதிக்கொள்ளாமல் இருக்க) நன்கு விழித்துக்கொண்டீர்களா என்று விசாரிக்கப்பட்டவர்
- **५९१. सोवाहिकदिवाकरः** பகல் காரியங்களுக்கு சூரியனால் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
- **५९२. सोरात्रिकतुषारांशुः** இரவு காரியங்களுக்கு சந்திரனால் அனுகூலம் செய்யப்பட்டவர்
- **५९३. सौयामिकदिवानिशः** பகல் இரவும் சேர்ந்து அனுகூல பொழுதுகள் அளிக்கப்பட்டவர்
- ५९४. अवाक् (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) வாக்கு அற்றவர்
- ५९५. अकायः (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) உடலற்றவர்
- ५९६. अचित्तः (நிர்குண ஸ்வரூபத்தில்) மனம் அற்றவர்
- ५९७. दण्डी தண்டம் ஏந்தியவர்
- ५९८. द्वेततमोरविः த்வைதம் எனும் இருளுக்கு சூரியன் போன்றவர்
- ५९९. पङ्गुणः (ஆளுகை, தர்மம், புகழ், செல்வம், ஞானம், வைராக்யம் ஆகிய) ஆறு குணமுடைய (பகவத்ஸ்வரூபமானவர்)
- ६००. सप्तमङ्गीस्याद्वादमेदी (இருக்கலாம், இல்லாமல் போகலாம் முதலிய) ஏழு விதமாக "இருக்கலாம்" என்று சொல்லும் (ஜைன மதத்தை) உடைத்தவர்
- ६०१. अष्टिसिद्धिमान् எட்டு (பெரிய) சித்திகள் உடையவர்
- ६०२. त्र्यक्षमूर्तिः முக்கண் உடைய (அம்பாள்/சிவன்) வடிவினர்
- **६०३. चतुर्वर्गसुरिमः** நான்கு புருஷார்த்தங்களை (பொழியக்கூடிய) காமதேனுவானவர்
- ६०४. बुद्धिवेषिता ஞானத்தை (உணவுபோல்) பரிமாறக்கூடியவர்
- ६०५. श्रीनवावरणाचीदिविद्याचार्यः ஸ்ரீ நவாவரண அர்ச்சனை முதலான வித்யைகளுக்கு ஆசிரியர்

- ६०६. अद्शः (கர்ப்பவாஸம், பாலியம் முதலிய ஶரீர) நிலைகள் அற்றவர்
- **६०७. अजरः** வடிவழகு குன்றாதவர்
- **६०८. रुद्रेकाद्शिनीजापस्त्रिपतार्धेन्दुशेखरः** பதினோரு முறை ருத்ரம் ஜபம் செய்வித்து பிறைசூடிக்கு அபிஷேகம் செய்வித்தவர்
- ६०९. निर्गन्धः (தற்) பெருமையற்றவர்
- ६१०. न्यस्तकमोँघः (உலகச்) செயல்களாகிய ப்ரவாஹத்தை விடுத்தவர்
- ६११. निःश्रेयसरतः ஒப்பில்லா ஆனந்தத்தில் எப்போதும் திளைத்திருப்பவர்
- **६१२. अरितः** (லௌகிக) ஸுகத்தை நிராகரித்தவர்
- **६१३. निरन्तः** முடிவில்லாதவர்
- **६१४. नीरुजः** வலியற்றவர்
- ६१५. अनीडः (தனக்கென தனி) இடம் வைத்துக்கொள்ளாதவர்
- ६१६. नियमव्रजधूर्वहः பலவித கட்டுப்பாடுகளை திறம்பட நிர்வகிப்பவர்
- **६१७. निगुम्भशतनिर्दिष्टनिर्दुष्टाद्वैतपद्धतिः** நூற்றுக்கணக்கான குழாம்களுக்கு குற்றமற்ற அத்வைத பாதையைக் காட்டியவர்
- **६१८. सङ्क्षेपशारीरककृत्सर्वज्ञात्मार्पितासनः** ஸங்க்ஷேப மாரீரகம் செய்த ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு (தமக்கு பிறகு காஞ்சீ காமகோடி பீட) ஆஸனத்தை அளித்தவர்
- **६१९. नेष्कर्म्यसिद्धिकृद्वातिककृद्देवेश्वरान्तरः** நைஷ்கர்ம ஸித்தியை செய்தவரும் வார்த்திகத்தை செய்தவருமான ஸுரேம்வரரை (ஸர்வஜ்ஞாத்மாவுக்கு முன்) அடுத்தவராக்கியவர்
- ६२०. प्रुष्टरीकापञ्चपादीपाठतोषितपद्मपत् எரிந்துபோன உரையின் ஐந்து பாதங்களை ஒப்பித்து பத்மபாதரை சந்தோஷப்படுத்தியவர்
- **६२१. हस्तामलकिताध्यात्महस्तामलकहंसकः** ஆத்ம தத்துவத்தை உள்ளங்கை நெல்லிக்கனி போல் கொண்ட ஹஸ்தாமலகருக்கு துறவறமளித்தவர்

- **६२२. बहुमन्दानन्दिगिरितोटकप्रकटाञ्यधीः** மிகவும் சுமாரான (திறம்கொண்டிருந்த) ஆநந்தகிரி (என்ற சீடர்) தோடகம் (எனும் யாப்பில் குருவைத் துதித்து
- **६२३. चित्सुखाचार्यक्नुप्तात्मचर्याविख्यापिताश्रमः** சித்ஸுகாசார்யரால் இயற்றப்பட்ட தன் சரிதையால் விளக்கப்பட்ட ஆர்ரம (நிஷ்டையை) உடையவர்
- ६२४. उपदेशसहस्रादिप्रथितप्रकटाद्वयः உபதேரை ஸாஹஸ்ரீ முதலிய (நூல்களால்) பரவலாக (பலரும் பயன்பெற) அத்வைதத்தை விளக்கியவர்
- **६२५. आम्नायाष्ट्रकिनर्देष्टा** (ஞான மார்க்கத்திற்கு ஸாதனமான) எட்டு ஆம்னாயங்களுக்கு வழிகாட்டி
- **६२६. मध्यमाम्नायनिष्ठितः** மத்யம (நடு) ஆம்னாயத்தில் (தானே முதல் பீடாதிபதியாக) நிலைத்தவர்
- **६२७. विजृम्भणद्शाध्वस्ततथागतपथागतः** (இந்த ஆம்னாயங்கள்) வளருவதால் (நாஸ்திகராகிய) புத்த மதத்தினவரை த்வம்ஸம் செய்தவர்
- **६२८. द्वारकामठिनमाता** (முதல் ஆம்னாயத்திற்கு) துவாரகா மடத்தை நிர்மாணித்தவர்
- **६२९. कालिकापीठकल्पकः** காளிகா(வை ஆம்னாய மக்தியாகக் கொண்ட) பீடத்தை உருவாக்கியவர்
- ६३०. सिद्धेश्वरसपर्याकृत् (ஆம்னாய ஈம்வரராக) ஸித்தேம்வரரை வழிபட்டவர்
- ६३१. भद्रकालीप्रसादनः (ஆம்னாய மக்தியான) பத்ரகாளியை சந்தோஷப்படுத்தியவர்
- ६३२. छन्दोगः (ஆம்னாய வேதமான) ஸாமவேதத்தை ஓதியவர்
- ६३३. कीटवारस्थः பூச்சிகளை இம்சிக்காமல் இருக்கும் (ஆம்னாய) விரதம் கொண்டவர்
- **६३४. गोमतीतीर्थसेवनः** கோமதீ (என்னும் நதியை ஆம்னாய) தீர்த்தமாக சேவித்தவர்
- **६३५. स्वरूपब्रह्मचार्यार्यपद्मपादिनदेशकृत्** (ப்ரஹ்ம) ஸ்வரூபர் என்ற ப்ரஹ்மசாரிக்கு ஆசானான பத்மபாதருக்கு வழிகாட்டியவர்

- ६३६. आश्रमी (இந்த ஆம்னாயத்திற்கு தருநாமிகளில்) ஆர்ரம எனும் பட்டம் அளித்தவர்
- **६३७. तत्त्वमस्यादिमहावाक्यार्थरूपवान्** (ஸாமவேதத்தின்) தத்த்வமஸி (என்பதை) முதலாகக் கொண்டு (உபதேசித்த) மஹா வாக்கிய வடிவானவர்
- ६३८. ज्योतिर्मठकरः (இரண்டாம் ஆம்னாயத்திற்கு) ஜ்யோதிர் மடத்தை நிறுவியவர்
- ६३९. ज्योतिष्मतीपीठनिदेशकृत् ஜ்யோதிஷ்மதீ பீடத்துக்கு வழிகாட்டியவர்
- ६४०. बद्यांश्रमसंस्थानः பதரிகாம்ரமத்தை இருப்பிடமாகக் கொண்டவர்
- ६४१. अलकनन्दावगाहनः அலகாநந்தாவில் நீராடியவர்
- ६४२. आथर्वणाङ्गिरोवेदी அதர்வாங்கிரஸ வேதத்தை அறிந்தவர்
- **६४३. श्रीपूर्णागिरिसेवकः** ஸ்ரீ பூர்ணாகிரி (எனும் தேவியை) சேவித்தவர்
- ६४४. गोवर्धनमठीनाथः (மூன்றாவது ஆம்னாயத்திற்கான) கோவர்த்தன மடத்தின் தலைவர்
- **६४५. गिरियोगपटाश्रयः** (தமநாமிகளுள்) கிரி என்ற யோகபட்டத்தை (சில மிஷ்யர்களுக்கு) ஆம்ரயித்தவர்
- ६४६. पुरुषोत्तमसत्क्षेत्री புருஷோத்தமரின் நல்ல க்ஷேத்ரத்தில் இருந்தவர்
- ६४७. विमलापीठकल्पकः விமலா பீடத்தை முறைப்படுத்தியவர்
- ६४८. **रातानन्दः** (உலகாயத ஆனந்தத்தை விட) நூறு நூறு மடங்கு ஆனந்தம் கொண்டதாக (உபநிஷத்தில் வர்ணிக்கப்பட்டவர்)
- ६४९. **হানীजাঃ** (அவ்வாறே) நூறு நூறு மடங்கு மக்திகளையும் கொண்டவர்
- ६५०. दशेन्द्रियविनिग्रहः பத்து இந்திரியங்களையும் அடக்கியவர்
- ६५१. श्रीतुन्दिलितदेशश्रीऋश्यश्क्षगिरिश्रयी (நான்காவது ஆம்னாயத்திற்கு) அழகு கொழிக்கும் தேமமாகிய ரும்யம்ருங்க கிரியில் தங்கியவர்
- ६५२. शारदावचनख्यातव्याख्यापीठाधिरोहणः வ்யாக்யான பீடத்தில் அமரும்படி மாரதையின் வாக்கினால் அருளப்பட்டவர்

- **६५३. रामचन्द्रपुरक्षेत्री** ராமசந்த்ரபுரம் என்ற க்ஷேத்ரத்தில் வசித்தவர்
- ६५४. तुङ्गभद्रातटाश्रमी துங்கையும் பத்ரையும் (கூடுமிடத்தின்) தடத்தில் ஆம்ரமம் அமைத்தவர்
- **६५५. वराहदेवतासारशारदाह्वयशक्तिभृत्** வராஹரை தேவனாகவும் மாரதையை மக்தியாகவும் கொண்டவர்
- ६५६. भूरिवारी மிகுதியான (செல்வச்செழிப்பைத்) தவிர்ப்பதை (வ்ரதமாகக் கொண்டவர்)
- ६५७. कृष्णयजुर्वेदी க்ருஷ்ண யஜுர் வேதத்தை பயின்றவர்
- **६५८. श्रीभारतीपदः** பெருமைக்குரிய பாரதி எனும் பட்டத்தை (மிஷ்யர்களுக்கு அளித்தவர்)
- **६५९. विभण्डकाधिष्ठानस्थमलहानिकरेशहक्** விபண்டக முனிவரின் இருப்பிடத்தில் உள்ள மலஹானிகரேமரை தரிசித்தவர்
- ६६०. विरूपाक्षमहादेवमहनीयपदाश्रयः (அதே கர்ணாடகத்தில் ஹம்பியில்) விரூபாக்ஷ (க்ஷேத்ரத்தில் உள்ள) மஹாதேவரின் உயர்ந்த கோவிலை ஆம்ரயித்தவர்
- ६६१. मनीषिमण्डलीमान्यमौलाम्नायमहागुरः பண்டிதருவகு மதிக்கத்தக்க (ஐந்தாவது) மூல ஆம்னாயத்தின் (ஸ்தாபகரான) மஹாகுருவானவர்
- **६६२. प्राच्यप्रतीच्यावाच्योदीच्याम्नायादिमदेशिकः** கிழக்கு, மேற்கு, தெற்கு, வடக்கு (ஆகிய மற்ற) ஆம்னாயங்களுக்கு முதல் ஆசானாகக் கருதப்படுபவர்
- **६६३. प्राच्याम्नायसुविन्यस्तहस्तामलकसंस्तुतः** கிழக்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ஹஸ்தாமலகரால் நன்கு வணங்கப்பட்டவர்
- **६६४. प्रतीच्याम्नायसन्देशनानन्दितसनन्दनः** மேற்கு ஆம்னாயத்திற்கு உத்தரவிடப்பட்டதால் (பத்மபாதர் எனும்) சனந்தனரை சந்தோஷித்தவர்
- **६६५. अवाच्याम्नायनिक्षिप्तपृथ्वीधरनताङ्गिकः** தெற்கு ஆம்னாயத்தில் வைக்கப்பட்ட ப்ருத்வீதவரால் வணங்கப்பட்ட திருவடியினர்

- **६६६. उदीच्याम्नायजानन्दानन्दगिर्यमिवन्दितः** வடக்கு ஆம்னாயத்தில் ஏற்படும் ஆனந்தத்துடன் ஆனந்தகிரியால் வணங்கப்பட்டவர்
- ६६७. कामकोटीपीठपतिः காமகோடி பீடத்தின் அதிபதி
- ६६८. कम्पावेगवतीचरः கம்பா வேகவதீ நதிகளுக்கு இடையில் சஞ்சரித்தவர்
- **६६९. एकाम्रनाथचरणसरोजातमधुव्रतः** ஏகாம்ரநாதரின் திருவடித்தாமரைகளை (மொய்க்கும்) தேனீ போன்றவர்
- **६७०. कामाक्षीचरणद्वन्द्वपादुकार्चनतत्परः** காமாக்ஷியின் இரு திருவடி பாதுகைகளையும் அர்ச்சிப்பதில் ஈடுபாடுடையவர்
- ६७१. ऋग्वेदात्मा ருக் வேத சொருபமானவர்
- ६७२. परब्रह्मव्यवस्थापनधीरधीः பர ப்ரம்ஹத்தை (மாஸ்த்ரப்படி) நிறுவுவதில் பராக்ரமம் காட்டிய புத்தியுடையவர்
- **६७३. सत्यव्रतसमाख्यातकाश्च्यन्तरितविग्रहः** ஸத்யவ்ரதம் எனப்படும் காஞ்சியில் (இறுதியில்) தன் உடலை மறைத்தவர்
- **६७४. सर्वज्ञपीठाध्यारोहलुप्तसार्वज्ञ्यसंशयः** ஸர்வஜ்ஞ பீடம் ஏறியதால் "இவர் அனைத்தையும் அறிந்தவரா?" என்ற ஐயத்தைத் தொலைத்தவர்
- ६७५. सुरेश्वरादिसच्छात्रसमाराधितपादुकः ஸுரேம்வரர் முதலிய நல்மாணாக்கர்கள் வணங்கிய பாதுகையை உடையவர்
- **६७६. मीमांसाद्वयपारीणः** (பூர்வம் உத்தரம் ஆகிய) இரு மீமாம்ஸைகளில் கரைகண்டவர்
- **६७७. काणादाक्षपदाध्ववित्** வைமேஷிகம் ந்யாயம் இரண்டின் பாதையையும் அறிந்தவர்
- **६७८. द्वात्रिंशदायुःकिलतित्रिःप्रदक्षिणभूतलः** முப்பத்திரண்டு வயதிற்குள் மும்முறை பூமியை (பாரதத்தை) ப்ரதக்ஷிணம் செய்தவர்
- **६७९. आसेतुहिमशैलान्तधर्मस्थापनदेशिकः** சேது முதல் இமாலயம் வரை தர்மத்தை நிலைநிறுத்திய ஆசிரியர்

- **६८०. विद्यावशीकृताशेषदेशविद्वज्जनाचितः** தம் வித்யையால் பரவசமான அனைத்து தேசத்து அறிஞர்களாலும் பூஜிக்கப்பட்டவர்
- **६८१. जगद्गरः** உலகிற்கே குரு
- ६८२. जगद्योनिः (ஈசனார் வடிவில்) உலகின் பிறப்பு (இருப்பு மறைவுகளுக்கு) இடமானவர்
- ६८३. शास्त्रयोनिः (ஈசனார் வடிவில்) மாஸ்த்ரங்களின் பிறப்பிடம்
- ६८४. समन्वयी (முரணாகத் தோன்றும் வேதாந்த வாக்யங்களை) ஒருங்கிணைத்தவர்
- ६८५. स्पष्टास्पष्टब्रह्मिलङ्गी தெளிவாகவும் தெளிவின்றியும் பரம்பொருளைக் குறிப்பவற்றை (அறிந்தவர்)
- ६८६. साङ्ख्योगविमर्शकृत् ஸாங்க்ய யோக (மாஸ்த்ரங்களை) பரிசீலித்தவர்
- ६८७. वैयाकरणधीशोधी இலக்கணம் கூறுபவர்களின் கருத்தை பரிசோதித்தவர்
- ६८८. वसिष्ठः வசிஷ்டர் (போல் பிறரின் தாக்குதலை எளிதில் சமாளித்தவர்)
- ६८९. क्रुबम्बरः (பரம்பொருள் வடிவில்) விண்ணை ஆடையாக கொண்டவர்
- **६९०. गोतमीयवचोमुद्री** ந்யாய மாஸ்த்ரத்தின் (குறைகொண்ட) வாதங்களை முடக்கியவர்
- ६९१. वैरोषिकमदापहः வைசேஷிகர்களின் கருவத்தை அடக்கியவர்
- ६९२. शोद्धोदनिमदोत्सादी புத்த மதத்தினரின் செருக்கை சீர்குலைத்தவர்
- ६९३. जैमिनीयकुदृष्टिहृत् ജൈமினீயத்தின் குறுகிய பார்வையை முறியடித்தவர்
- **६९४. दिगम्बरनयान्तप्तः** திகம்பரர்கள் கொண்டு வந்த கடைசி வாதங்களையும் அழித்தவர்
- ६९५. ध्वस्तपाशुपतिकयः பாசுபதர்களின் செயல்பாடுகளை சிதறடித்தவர்
- **६९६. शून्यात्मवादिनहिर्ता** ஆத்மா (இல்லை, அனைத்தும்) சூன்யமே என்னும் வாதத்தை வீழ்த்தியவர்
- **६९७. भिन्नभागवतागमः** (ஸங்கர்ஷணன் முதலிய நான்கு வடிவங்களே இறைவனின் உண்மை வடிவம் என்ற) பாகவத மதத்தை வென்றவர்

- **६९८. विनोदिनर्मितप्रौढन्यायगम्भीरभाष्यकृत्** வலுத்த ந்யாயங்களால் கம்பீரமாகவுள்ள பாஷ்யத்தை விளையாட்டாக இயற்றியவர்
- ६९९. व्याख्यातजीवचरितः श्रुवाळीळं म्रीष्ठ्रं क्र वीवां के बीधावां
- ७००. विश्वसृष्टिविशारदः பிரபஞ்சத்தின் தோற்றத்தை கற்றுணர்ந்தவர்
- ७०१. स्थितिसीमाविभागज्ञः இருப்பின் எல்லைகளை பாகுபடுத்த தெரிந்தவர்
- ७०२. प्रलयार्थप्रकाशकः பிரளயத்தின் பொருளை தெளிவாக்கியவர்
- ७०३. संसारतत्त्वसञ्चावान् சம்சாரத்தின் தத்துவத்தை அலசியவர்
- ७०४. मायातत्त्वनिरूपणः மாயா தத்துவத்தை நிரூபணம் செய்தவர்
- **७०५. समूलाविद्यकाध्यारोपोन्मूलनविचक्षणः** அவித்யையால் ஏற்பட்ட பிரமையை அதன் காரணத்துடன் வேரறுப்பதில் வல்லுநர்
- ७०६. संसारतारणोपायसन्दर्शनपिष्ठवाक् ஸம்ஸாரத்தைத் தாண்டும் வழியைக் காட்டுவதில் மிகவும் திறமுள்ள வாக்கினர்
- **७०७. रिस्तकाह्णाद्जनकमहावाक्यचमत्कृतिः** (அத்வைத) ரஸிகர்களுக்கு உவகையளிக்கும்படி மஹாவாக்யங்களை செம்மையுற விளக்கியவர்
- **७०८. ध्वनिप्रधानामरुकशतश्लोकीमहाकविः** உள்ளர்த்தத்தை முக்கியமாகக் கொண்ட அமருக மத ம்லோகி என்ற நூலை இயற்றியவர்
- ७०९. ब्रह्मसूत्रब्रह्मशिखागीताप्रस्थानभाष्यकृत् ப்ரஹ்ம ஸூத்ரம், உபநிஷதம், கீதை ஆகிய ப்ரஸ்தானங்களுக்கு விரிவுரை எழுதியவர்
- ७१०. प्रत्यग्वह्मेक्यबोधाध्वदर्शी உள்ளிருக்கும் பிரமத்துடன் ஐக்கியம் பெறும் வழியைக் காட்டியவர்
- ७११. मोक्षाध्वदर्शकः மோக்ஷத்தின் பாதையைக் காட்டியவர்
- ७१२. निरन्तरकृताम्नायशिरोनिगदशीलनः எப்போதும் உபநிஷதங்களின் சொற்றொடர்களையே சிந்தித்து வந்தவர்
- ७१३. वेदान्तवनहर्यक्षः வேதாந்தமெனும் அரண்யத்தில் ஸிம்ஹம் போன்றவர்

- ७१४. तत्त्वज्ञानमहोद्धिः தத்துவ ஞானத்தில் பரந்த சமுத்திரமனையவர்
- ७१५. तरुणः இளைஞர்
- ७१६. तरुणीटूरः (ஆனால்) இளம் பெண்களிடம் ஈடுபாடில்லாதவர்
- ७१७. तारापतिसमच्छविः சந்த்ரனைப் போன்ற பொலிவுடையவர்
- ७१८. तारकब्रह्मतत्त्वज्ञः கடை தேற்றும் பிரம்ம தத்துவத்தை அறிந்தவர்
- ७१९. **तपस्वी** தவமியற்றியவர்
- ७२०. तापसानुगः தவசிகளைப் பின்பற்றுபவர் (அல்லது) தவசிகளான சீடர்களை உடையவர்
- ७२१. तापत्रयविनिर्मुक्तः (உடல், இயற்கை, பிராணிகள் ஆகிய) மூன்றாலும் ஏற்படும் இன்னல்கள் அற்றவர்
- ७२२. निलनोक्तिनिरासकृत् மிருதுவான சொற்களால் (மாற்றுக்கருத்துகளை) நிராகரித்தவர்
- ७२३. अलङ्कृती (மனவடக்கம் மற்றும் புலனடக்கம் ஆகிய) அலங்காரங்களைக் கொண்டவர்
- ७२४. अतिमान्यश्रीः (உலக ரீதியில்) மிகவும் மதிக்கத்தக்கவர்களால் நாடப்பட்டவர்
- ७२५. आत्मवित् (தன் சொரூபமாகிய) ஆத்மாவை (உலகின் காரணமான ப்ரஹ்மமாக) அறிந்தவர்
- ७२६. ब्रह्मवित्तमः ப்ரஹ்மமாகிய (உலகின் காரணத்தை தன் சொரூபமான ஆத்மாவாக) உணர்ந்தவர்களுள் சிறந்தவர்
- ७२७. ब्रह्मण्यः வேதத்திற்கு ஹிதமானவர்
- ७२८. ब्रह्मभूतः தாமே ப்ரஹ்மமாக ஆனவர்
- ७२९. स्वाधिष्ठानाञ्चितकाञ्चिगः தனது இருப்பிடமாக விரும்பிய (மதிக்கத்தக்க) காஞ்சியிலேயே நிலைத்தவர்
- ७३०. कृतपुण्यस्थलीयात्रः புண்ணிய தலங்களுக்கு யாத்திரை செய்தவர்

- **७३१. ऊर्ध्वाम्नायार्थतत्त्ववित्** (ஆறாவது) ஊர்த்வ (மேலான) ஆம்னாயத்தின் தத்துவப் பொருளை உணர்ந்தவர்
- ७३२. केवल्यक्षेत्रविजयी (தானொன்றே இருப்பதாகிய) கைவல்யமெனும் க்ஷேத்ரத்திற்கு விஜயம் செய்தவர்
- ७३३. शुद्धमानसतीर्थकः சுத்தமான மனதையே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்
- ७३४. सुमेरुमूलसञ्चारी (உலகிற்கு உச்சியான) மேருவின் அடியை (மடமாகக் கொண்டு) ஸஞ்சரித்தவர்
- ७३५. मायाशक्तिविभावनः மாயையை (பீடத்தின்) மக்தியாக பூஜித்தவர்
- ७३६. सत्यज्ञानाभिधाह्वानी (இந்த்ர ஸரஸ்வதி முதலிய பட்டங்களுக்கு பதில்) ஸத்யம் ஞானம் என்ற பெயர்களாலேயே அழைக்கத்தக்கவர்
- ७३७. अखण्डानन्दमूर्तिमान् இடையறாத ஆனந்த மூர்த்தியானவர்
- **७३८. सोहंशिवोहंवाक्यश्रीः** ஸோஹம் (அதாவது) சிவனே நான் என்பதை (மஹா)வாக்யமான செல்வமாகக் கொண்டவர்
- ७३९. प्रत्यगाम्नायवेदनः (ஏழாவது) உள்ளிருக்கும் ஆம்னாயத்தை அறிந்தவர்
- ७४०. निरञ्जनेश्वरासेवी (സம்സார) தோஷங்களற்ற ஈர்வரனை வழிபடுபவர்
- ७४१. श्रीकरः निरुं अंडिक श्रीकरः निरं अंडिक श्रीकरः निरुं अंडिक श्रीकरः निरुं अंडिक श्रीकरः निरं अंडिक श
- ७४२. सम्प्रदायभृत् சம்பிரதாயங்களை (வகுத்தளித்தமையால்) தாங்கியவர்
- ७४३. विद्यापीठमहायोगी வித்யையை (மக்தியாகக் கொண்ட) பீடத்தின் மஹா யோகி
- ७४४. परमात्ममठाश्रयः பரமாத்மாவையே (பீடத்தின்) மடமாக ஆம்ரயித்தவர்
- ७४५. त्रिपुरीतीर्थविहतिः (அறிவு அறிபவன் அறியப்படுவது என்னும்) த்ரிபுடியே (பீடத்தின்) தீர்த்தமாகக் கொண்டு அதில் நீராடியவர்
- ७४६. योगक्षेत्रदिवाकरः யோகத்தையே (பீடத்தின்) க்ஷேத்ரமாகக் (கொண்டு அதனை ப்ரகாஶிக்க வைக்கும்) ஸூர்யனானவர்

- ७४७. श्रीविद्याशक्तिजपनः ஸ்ரீவித்யையை (பீடத்தின்) மக்தியாகக் (கொண்டு) ஜபத்தினால் (உபாஸித்தவர்)
- ७४८. मन्त्री மந்த்ரங்களின் (இருப்பிடமானவர்)
- ७४९. सन्तोषनेगमी (தன்னில்) சந்தோஷித்து இருப்பதையே ஸம்ப்ரதாயமாகக் கொண்டவர்
- ७५०. परहंसपरिवाट् பரமஹம்ஸ (நிலையையே ஈஶ்வர ஸ்வரூபமாகக் கொண்ட அத்தகைய நான்காம் நிலையிலுள்ள) ஸந்ந்யாஸி
- ७५१. श्रीसिद्धाख्यब्रह्मचर्यभृत् பொலிவுடன் தன்னில் நிலைபெற்ற ப்ரஹ்மசர்யத்தைக் கொண்டவர்
- ७५२. मातृकेकमहावाक्यः (ஐம்பது) மாத்ருகா வர்ணங்களையும் ஒரே மஹாவாக்ய வடிவில் (பார்ப்பவர்)
- ७**५३. क्षेत्रज्ञः** உடலைப் பார்க்கும் ஸாக்ஷி சைதந்ய வடிவமான (ஆம்னாய பீடாதிபதியானவர்)
- ७५४. अक्षरतः परः (உலகில்) அழியாதவை (என்று ப்ரஸித்தமானவற்றைக்) காட்டிலும் பெரியவர்
- ७५५. निष्कलाम्नायनिरतः (எட்டாவது) நிஷ்கல ஆம்னாயத்தில் நிலைபெற்றவர்
- ७५६. शान्तिदान्तियुतः சாந்தமும் பொறுமையும் உடையவர்
- ७५७. चितिः சைதன்யத்தையே (சக்தியாகக் கொண்டவர்)
- ७५८. आनन्दपीठसंविष्टः ஆனந்த பீடத்தில் உறைந்தவர்
- ७५९. स्वानुभूतिपदाश्रयः சுய அனுபவமே க்ஷேத்ரமாகக் கொண்டவர்
- ७६०. श्रद्धामेत्र्यादिनिर्ज्ञेयः (ராஸ்த்ரத்தில்) நம்பிக்கையாலும் (மற்றவர்களிடத்தில்) நட்பாலும் அறியத்தக்க (சொரூபத்தினர்)
- ७६१. सचिन्मठसमाश्रयः ஸச்சித் (ஸ்வரூபமே) மடமாகக் கொண்டவர்
- ७६२. नभस्तीर्थः ஆகாயமே தீர்த்தமாகக் கொண்டவர்

- **७६३. नमोदर्शी** ஆகாயம் (போன்று ஸூக்ஷ்மமாக உள்ள பரம்பொருளைப்) பார்த்தவர்
- ७६४. नभः ஆகாயம் (முதலிய சொற்களால் உபநிஷத்துகளில் சொல்லப்பட்ட பரம்பொருளானவர்)
- ७६५. चिच्छक्तिचिन्तनः சைதன்யம் மற்றும் அதன் மக்தி இவற்றை சிந்திப்பவர்
- ७६६. प्रणवप्रणयी ப்ரணவத்தில் அமிழ்ந்தவர்
- ७६७. नम्री (தமது குருமார்கள் விஷயத்தில்) வணங்கிய (உடலுறுப்பகளைக்) கொண்டவர்
- ७६८. नन्दगोपजपूजकः நந்த கோப குமாரனை பூஜித்தவர்
- ৩६९. भूमा (தன்னைக் காட்டிலும் பெரியது இல்லாத) பெரும்பொருளானவர்
- ७७०. ब्रह्मानन्द्नामा பிரமானந்தம் என்ற பெயர் கொண்ட (ஸ்வரூபத்தினர்)
- ७७१. कूटस्थः (ஸாக்ஷி ஸ்வரூபமாக) மாறாமல் உள்ளுறைபவர்
- ७७२. अ**क्षरः** அழிவில்லாதவர்
- ৩৩২. इप्टदः (பக்தர்களின்) விருப்பத்தை நிறைவேற்றுபவர்
- ७७४. पराक्प्रत्यगभिन्नः உள்ளும் வெளியும் தனித்தனியாக இல்லாதவர்
- ७७५. सकलात्मा அனைத்திலும் உயிராக உறைபவர்
- ७७६. अकलः பகுதிகளற்றவர்
- ৩৩৩. पुरु: (மாயையால்) பல (வடிவமாகத் தோன்றுபவர்)
- ৩৩८. पुरुषः மரீரத்தில் வீற்றிருக்கும் (ஆத்ம ஸ்வரூபமானவர்)
- ७७९. पुष्कलः ஸம்ருத்தியுடையவர்
- ७८०. पूर्णः நிறைவானவர்
- ७८१. सत्तामात्रः இருப்பாக இருப்பவர்
- ७८२. पुरातनः பழமை காலமுதலே இருப்பவர்
- ७८३. भोगयोगी நுகர்வை (ஸத்விஷயத்தில் கட்டுப்படுத்தும்) யோகத்தை அளிப்பவர்

- ७८४. योगभोगी யோகத்தையே தன் நுகரும் பொருளாக ஆக்கியவர்
- ७८५. भुवनात्मा உலகங்களில் உள்ளுறைபவர்
- ७८६. वनेचरः (விரும்பத்தக்க ஒரே பொருளாகையால்) வனம் (எனப்படும் ப்ரஹ்மத்தில் ஸஞ்சரிப்பவர்)
- ७८७. भूतिकृत् (ஸத்கார்யங்களை செய்வதற்கு வேண்டிய) செல்வத்தை உருவாக்குபவர்
- ७८८. भूतिदः (அத்தகைய) செல்வத்தை (அத்தகைய காரியங்களுக்காக நமக்கு) தருபவர்
- ७८९. भूतः எங்கும் வ்யாபித்திருப்பவர்
- ७९०. भूरिशः (பக்தர்களுக்கு அருள) பலவிடங்களில் உறைபவர்
- ७९१. भूतभावुकः இறைவனின் ஸ்ருஷ்டியை ரசிப்பவர்
- ७९२. चक्रभृत् (உலகத்திற்கு க்ஷேமம் ஏற்படும் வகையில் காஞ்சீபுரத்தில்) ஸ்ரீசக்ரத்தை ஸ்தாபித்தவர்
- ७९३. चकराजाचीसम्प्रदायप्रवर्तकः (அங்கு) ஸ்ரீசக்ர பூஜை அர்ச்சனை சம்பிரதாயத்தை செயல்படுத்தியவர்
- ७९४. चिकिभूषणभूतात्मा பாம்புகளை அணிகலன்களாக்கிக் கொண்ட (சிவனார்) வடிவினர்
- ७९५. चक्रपाणिनिषेवितः (சிவனார் வடிவில்) விஷ்ணுவினால் ஸேவிக்கப்பட்டவர்
- ७९६. चकवर्तिशिरोभूषाशेषायितनखच्छविः சக்ரவர்த்திகளின் தலையணிகளில் அங்கமான நககாந்தியைக் கொண்டவர்
- ७९७. चामीकरीकृतामत्रद्रिद्रब्राह्मणीगृहः ஏழை அந்தண பெண்மணியின் வீட்டில் உள்ள (மண்) கலயங்கள் அனைத்தும் தங்கமாக்கியவர்
- ७९८. चतुरोदारगम्भीरवाक्यनिर्भरवादकृत् (யுக்தியால்) சாதுர்யமிக்கதும் (கருணையால்) பெருந்தன்மை மிக்கதும் (பொருளினால்) கம்பீரம் மிக்கதுமான வாக்யங்களால் வாதம் செய்பவர்

- **৩९९. चञ्चलः** பயணித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
- ८००. चन्द्रचूडात्मा பிறைசூடி வடிவினர்
- **८०१. जितचम्पकनासिकः** சம்பங்கி (மொட்டை) விட (அழகிய) மூக்கை உடையவர்
- ८०२. चर्चितारोषभूचकसञ्चारिमतसञ्चयः பூமியெங்கும் ஸஞ்சரிக்கும் பலவித மதங்களை மிச்சமின்றி விசாரித்து (பதிலளித்தவர்)
- ८०३. चालिताद्वैतविज्ञानः அத்வைத ஞானத்தை (எங்கும்) ப்ரச்சாரம் செய்தவர்
- ८०४. चरः (பக்தர்களுக்கு அருள ஆங்காங்கு) ஸஞ்சரித்துக்கொண்டே இருப்பவர்
- ८০५. चित्री பலவித (திறன்கள்) கொண்டவர்
- ८०६. चिद्म्बरः मीठ्राकाण வடிவினர்
- **८०७**. चीर्णसत्यव्रतस्थानचिरन्तनसुखासिकः സத்யவ்ரத ஸ்தானம் (எனும் காஞ்சியில்) சுகமாக வெகுகாலம் தங்கியவர்
- ८०८. चूर्णितच्छात्रह्मिः மாணவர்களின் ஹ்ருதயத்தில் இருக்கும் சிக்கல்களை சூர்ணமாக்கியவர்
- ८०९. चूर्णपूर्णदुरास्यकृत् துஷ்டர்களின் வாய்களை மண்ணைக் கவ்வச் செய்பவர்
- ८१०. प्रतिष्ठापकधौरेयः ஸ்தாபனங்கள் ஏற்படுத்தியவர்களில் தலைச்சிறந்தவர்
- ८११. प्रतिष्ठितमहायशाः பெரும் புகழை நிலைநிறுத்தியவர்
- **८१२. प्रोढिविज्ञानवादिस्थगर्वसर्वङ्कषोदितः** பெரிய (பௌத்தர்களான) விஞ்ஞானவாதிகளின் கர்வத்தை முழுவதும் தேய்ப்பதற்காக வந்தவர்
- ८१३. निन्दिताशेषभूचारी பூமியில் இருப்போர்கள் அனைவருக்கும் (நித்ய) மகிழ்ச்சியை (அளிக்கவல்ல நன்மையை உபதேமித்தவர்)
- **८१४. यतिधर्मविमर्शकृत्** துறவிகளுக்கான தர்மத்தை ஆராய்ந்தவர்/நேராக காட்டியவர்

- ८१५. दर्शिताध्यात्मयाथात्म्यः ஆன்மிகத்தின் உண்மையைக் காட்டியவர்
- ८१६. सुधीसङ्घनिषेवितः அறிஞர் கூட்டத்தால் நாடப்பட்டவர்
- **८१७. नदीनद्सरस्तीर्थाप्रावपावितविग्रहः** நதி, நதம், ஏரி (முதலான) நீர்நிலைகளில் முங்கி நீராடி தூய்மை பெற்ற உடலினர் (உண்மையில் அவற்றை தூய்மைப்படுத்தியவர்)
- ८१८. पण्डितवातपाण्डित्यप्रमोषणपटूदितः (கர்வமுள்ள) பண்டிதர்கள் கூட்டத்தின் பாண்டித்யத்தை கவ்வவல்ல சொற்கள் கொண்டவர்
- ८१९. तत्पदार्थप्रकटनः தத் பதத்தின் பொருளை பிரகடனப்படுத்தியவர்
- ८२०. त्वम्पदार्थविवेककृत् த்வம் பதத்தின் பொருளை விளங்கச் செய்பவர்
- ८२१. नित्यानन्दः எப்போதும் ஆனந்தமாக இருப்பவர்
- ८२२. निरालम्बः (சுதந்திரமாய்) எதையும் சாராமல் இருப்பவர்
- ८२३. निरक्षः புலன்களுக்கு அப்பாற்பட்டவர்
- **८२४. निर्विलेक्षकः** எல்லாவற்றையும் (ஸாக்ஷி பாவத்துடன்) பார்ப்பவர்
- ८२५. नित्यधीः அழிவற்ற ஞானம் உடையவர்
- **८२६. नित्यसङ्कल्पः** நித்யத்தையே (அடைய வேண்டும் என்ற) ஸங்கல்பம் கொண்டவர்
- ८२७. निधिस्थः (மோக்ஷம் எனும்) பொக்கிஷத்தில் நின்றவர்
- ८२८. निरविद्यकः அவித்யை அற்றவர்
- ८२९. नित्यवासी நித்யமாகிய (பரம்பொருளில்) வசிப்பவர்
- **८३०. नित्यशुचिः** எப்போதும் தூய்மையாக இருப்பவர்
- ८३१. निर्लुब्यः பேராசை இல்லாதவர்
- **८३२. निगमारिहा** வேத விரோதிகளை ஒழிப்பவர்
- **८३३. निरञ्जनः** (ஸம்ஸார) தோஷங்கள் அற்றவர்
- **८३४. नित्यपूज्यः** எப்போதும் வணங்கத்தக்கவர்

- ८३५. नित्यमुक्तः எப்போதும் விடுதலையானவர் (ஸம்ஸார பந்தமே இல்லாதவர்)
- ८३६. निरीश्वरः (தனக்கு) தலைவன் இல்லாதவர்
- ८३७. निष्कर्ता (தன்னை) உருவாக்கியவன் அற்றவர்
- **८३८. निष्कृतिः** எதையும் சேர்த்துக்கொள்ளாதவர்
- ८३९. निःस्वः தனது என்று ஒன்றுமில்லாதவர்
- ८४०. निष्कः தங்கக்காசு (போன்றவர்)
- ८४१. निखिलवासभूः அனைத்தும் வசிக்கும் இருப்பிடமானவர்
- ८४२. पुरीशः (தேஹமாகிய) கோட்டையில் உறைபவர்
- **८४३. पूर्वगः** (அனைவருக்கும்) முன் செல்பவர்
- ८४४. पुण्यः புண்யமானவர்
- ८४५. पूर्वनामी முன்னோர்களை வணங்குபவர்
- ८४६. पुरुप्रियः பலருக்கும் பிரியமானவர்
- ८४७. विख्यातवीर्यः கொண்டாடப்படும் வீரம் மிக்கவர்
- ८४८. विद्येशः வித்யைகளுக்கெல்லாம் அதிபதி
- ८४९. श्रीविद्याषोडशीगुरुः ஸ்ரீவித்யையின் ஷோடமி மந்த்ரத்துக்கு குரு
- ८५०. लक्ष्मीः (அனைவராலும்) அடையாளம் காணப்பெறுபவர்
- ८५१. लक्ष्यः (வேத வாக்யங்களால் நேரடியாக தெரிவிக்கவியலாமல்) மறைமுகமாக தெரிவிக்கப்படுபவர்
- ८५२. लक्ष्मणः (ஶுபமான) அங்க லக்ஷணங்களை உடையவர்
- ८५३. लक्षणज्ञः லக்ஷணங்களை அறிந்தவர்
- ८५४. लसत्पदः ஒளிரும் ஸ்தானம் கொண்டவர்
- ८५५. हीमान् அடக்கமானவர்
- ८५६. हंसगतिः அன்னம் போன்ற (அழகுற) நகருபவர்

- ८५७. हंसः அன்னம் (போல் நித்யாநித்யங்களை பிரிக்கத்தெரிந்தவர்)
- ८५८. हंसश्वेतहद्म्बुजः அன்னம் போன்ற வெண்ணிற இதயத்தாமரை கொண்டவர்
- **८५९. हंसमन्त्रार्थतत्त्वज्ञः** ஹம்ஸ என்னும் மந்திரத்தின் தத்துவ பொருளை அறிந்தவர்
- ८६०. हंसवर्णः ஸூர்யன் போன்ற நிறத்தினர்
- ८६१. हरिप्रियः ஹரிக்கு பிரியமானவர்
- ८६२. हर्षामर्षसहः மகிழ்ச்சியும் கோபத்தையும் சகித்துக்கொள்பவர்
- **८६३. हासकुशलः** (உள்ளிருக்கும் ஆனந்தத்தால்) சிரித்துக்கொண்டு சுகமாய் இருப்பவர்
- ८६४. हानिवृद्धिनुत् மிகுவது குறைவது (இரண்டையும்) தள்ளிய (பரம்பொருளானவர்)
- ८६५. सभ्यः ஸபையில் முன்னிற்பவர்
- ८६६. सभापतिः ஸபைக்கு தலைவர்
- ८६७. स्वामी (அனைத்திற்கும்) உரிமையாளர்
- ८६८. सम्मृतिः (சேவை செய்பவர்களுக்கு அனுக்ரஹமாகிய) நல்ல ஊதியம் அளிப்பவர்
- ८६९. सम्भवापहः (மீண்டும் மீண்டும்) பிறப்பதன் (அவசியத்தை) தவிர்ப்பவர்
- ८७०. हीवेरशीतलस्वान्तः விளாமிச்சை வேர் போல் குளிர்ச்சியாகவும் (வாசனையாகவும் உள்ள) மனதைக் கொண்டவர்
- ८७१. हीमतीहारितात्मभाक् லஜ்ஜையுடவளாகிய (அம்பாளால் ஆனால் தைரியமாக) அபஹரிக்கப்பட்ட (பாதி) உடலைக் கொண்டவர்
- **८७२. लक्षितारोषमन्त्रार्थः** அனைத்து மந்த்ரங்களின் லக்ஷ்ய அர்த்தங்களையும் (அறிந்தவர்)
- ८७३. लक्षकोट्यण्डनायकः லக்ஷம் கோடி ப்ரம்மாண்டங்களுக்கு நாயகன்
- ८७४. लिलताङ्गः லளிதமான உடலைக் கொண்டவர்

- ८७५. लयज्ञाता (பிரம்மத்துடன்) லயத்தை அறிந்தவர்
- ८७६. लब्यस्वः தன்னை அடைந்தவர்
- ८७७. लब्चहर्षणः கிடைத்த (தன் சொரூபமான ஆனந்தத்தில்) களித்திருப்பவர்
- ८७८. कम्बुकण्ठः சங்கு போன்ற கழுத்துடையவர்
- ८७९. किरध्वंसी கலியை துவம்சம் செய்பவர்
- ८८०. कल्याणात्मा மங்களங்களில் உள்ளுறைபவர்
- ८८१. कलध्विनः அழகிய குரலுடையவர்
- ८८२. भूषितान्तर्वाणिचकः பண்டிதர்களின் கூட்டத்தை அலங்கரிப்பவர்
- ८८३. भूगः பூமியில் அவதரித்தவர்
- ८८४. भूसुरसेवितः பூமியில் வாழும் தேவர்களால் (அந்தணர்களால்) வணங்கப்பட்டவர்
- ८८५. यागवित् шाढां छळळा அறிந்தவர்
- ८८६. योगवित् யோகத்தை அறிந்தவர்
- ८८७. युक्तः காரியங்களில் தானே ஈடுபட்டவர்
- ८८८. यशोदः புகழை அளிப்பவர்
- ८८९. यमप्रियः சுய கட்டுப்பாட்டை விரும்புபவர்
- ८९०. ओङ्कारव्याहतिव्यग्रः ஓங்காரம் வியாஹ்ருதிகள் இவற்றில் இருந்து எண்ணங்களை நீக்காதவர்
- ८९१. निमतारातिमण्डलः எதிரிக்கூட்டத்தை (வாதில் வென்று) வணங்கச்செய்தவர்
- ८९२. **नागरौलिशरशारी** நாக பர்வதத்தின் உச்சியில் ஸஞ்சரித்தவர்
- ८९३. रामगिर्याश्रमाश्रयः ராமகிரி ஆம்ரமத்தை ஆம்ரயித்தவர்
- ८९४. वाञ्छितार्थप्रदः வேண்டிய செல்வத்தைத் தருபவர்
- ८९५. হার্বঃ (உலகை தன்னுள் லயமாகும்படி) ஸம்ஹரிப்பவர்
- ८९६. अदीनः ஏக்கமற்றவர்

- ८९७. **मोदमेदुरः** மகிழ்ச்சியில் களித்தவர்
- ८९८. यतिचर्याविवेकज्ञः யதிகளின் நடத்தையை ஆராய்ந்து அறிந்தவர்
- ८९९. यतधीः (விசாரங்களில்) புத்தியைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
- ९००. यतभावनः (வ்யவஹாரங்களில் மனோ)பாவத்தைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
- ९०१. ओङ्कारी ஓங்காரத்தையே (எப்பொழுதும் த்யானத்தில்) கொண்டவர்
- ९०२. वितताद्वेतश्रुतिन्यायः அத்வைதத்தைக் (காட்டும்) வேத (வாக்யங்களையும்) ந்யாயங்களையும் விவரித்தவர்
- ९**०३. कृपानिधिः** கருணைக்களஞ்சியம்
- ९०४. यन्ता நிர்வஹிப்பவர்
- **९०५. यतमनाः** மனதைக் கட்டுப்படுத்தியவர்
- **९०६. यम्यः** (பக்திக்கு) கட்டுப்படுபவர்
- ९०७. यज्ञाङ्गः யஜ்ஞங்களை உறுப்புகளாகக் கொண்டவர்
- ९०८. यज्ञभूषणः யஜ்ஞத்துக்கு ஆபரணம் போன்றவர்
- **९०९. यज्ञः** யஜ்ஞ (ஸ்வரூபி)
- **९१०. यज्ञपतिः** யஜ்ஞங்களுக்குத் தலைவர்
- ९११. यज्वा யஜமான (ஸ்வரூபியானவர்)
- ९१२. यज्ञभूः யஜ்ஞங்களின் ஆதாரம்
- ९१३. यज्ञभावनः யஜ்ஞங்களை நடத்துவிப்பவர்
- **९१४. कृपार्पितकरालम्बः** கருணை கைகொடுத்து தூக்கிவிடுபவர்
- ९१५. विध्वस्तविधिः ഖിதியை மாற்றவல்லவர்
- ९१६. अण्डसूः ப்ரஹ்மாண்டத்தை உருவாக்கவல்லவர்
- ९१७. निखिलक्ष्मातलाचार्यः பூமி முழுதுக்கும் ஆசார்யனானவர்
- **९१८. पाषण्डमतखण्डनः** போலி தத்துவங்களை உடைய மதங்களை கண்டித்தவர்

- **९१९. प्रतिष्ठापकमूर्धन्यः** உயர்ந்தவற்றை (தத்துவங்களை) நிலை பெறச்செய்தவர்
- **९२०. मताद्वयमहानयः** அத்வைதம் என்ற பெரும்பாதையை (வேதத்தின் கருத்தாக) தீர்மானித்தவர்
- ९२१. परिवाजकधूर्वोढा துறவிகளுள் முன்நிற்பவர்
- **९२२. अनन्तर्धः** அளவற்ற (உலகை) முன்நடத்துபவர்
- **९२३. अन्तरान्तरः** உள்ளுக்குள் உள்ளே (இருப்பவர்)
- ९२४. मुक्तः (ஸம்ஸாரத் தளைகளிலிருந்து) விடுபட்டவர்
- ९२५. मुकुन्दः கொண்டாடப்படும் புனிதர்
- **९२६. मध्यस्थः** சார்பில்லாமல் (தீர்ப்பு அளிப்பவர்)
- ९२७. मददूरः செருக்கிலிருந்து தூர (விலகியவர்)
- ९२८. मनोमयः (பக்தர்கள்) மனத்தில் (உள்ள த்யான) வடிவானவர்
- ९२९. शान्तः (உலகமே) அடங்கிய (நிலையிலுள்ளவர்)
- ९३०. হ্যুমঙ্কুरः மங்களம் செய்பவர்
- **९३१. शुक्रः** தூயவர்
- **९३२. ३र्रः** (தர்மத்தைக் காப்பாற்றுவதில்) சூரர்
- ९३३. शोकविवर्जितः சோகம் சிறிதும் அற்றவர்
- ९३४. मिक्षुः துறவி வடிவினர்
- ९३५. तरक्षुः (ஞானத்திற்கான) பாதையை செதுக்கியவர்
- **९३६. क्षमिता** பொறுமைசாலி
- ९३७. अक्षतिः (வாதங்களில்) காயமடையாதவர்
- **९३८. साक्षतार्चनः** அக்ஷதைகளுடன் கூடி அர்ச்சனை செய்பவர்/செய்யப்படுபவர்
- ९३९. राजराजाचितः அரசர்களுக்கெல்லாம் அரசர்களால் பூஜிக்கப்பட்டவர்
- **९४०. रङ्गः** ரஸிக்கவைக்கக்கூடியவர்
- **९४१. रञ्जकः** ரஸிக்கவைப்பவர்

- **९४२. रिममान्** ஒளி வீசுபவர்
- ९४३. रमः மகிழ்பவர்
- **९४४. रमणः** மகிழ்விப்பவர்
- ९४५. रसवादी ரஸவாதம் தெரிந்தவர்
- ९४६. रजतादिनिकेतनः வெள்ளி(ப்பனி) மலையில் வசிப்பவர்
- ९४७. अस्थूलः தூலமாக இல்லாதவர்
- ९४८. अनणुः அணுவாக இல்லாதவர்
- ९४९. हस्वः (கட்டைவிரல் அளவு) குட்டையான (ஜீவ சொரூபமானவர்)
- ९५०. **मनुः** மந்த்ர வடிவினர்
- ९५१. मेधा ஞாபக மக்தி வடிவினர்
- ९५२. महामनाः விசாலமான மனம் உடையவர்
- ९५३. बहुपादः வெகு தூரம் நடந்து பயணித்தவர் / (விம்வரூபத்தில்) பல கால்கள் உடையவர்
- ९५४. बहुभुजः (விம்வரூபத்தில்) பல தோள்கள் உள்ளவர்
- ९५५. बहुशीर्षः (விणंவரூபத்தில்) பல தலைகள் உள்லவர்
- ९५६. बहुप्रियः பலர் அன்புக்கும் உரியவர்
- ९५७. नान्तः प्रज्ञः (ஸ்வப்னத்தைப் போல்) உள்பொருளைப் பார்க்காதவர்
- ९५८. नप्रज्ञः (அனைத்துப் பொருள்களையும் ஒருசேர) பார்க்காதவர்
- ९५९. नबिहः प्रज्ञः (விழிப்பைப் போல்) வெளிப்பொருளைப் பார்க்காதவர்
- ९६०. नाप्रज्ञः சைதன்யமற்று இல்லாதவர்
- **९६१. प्रज्ञानघनः** திரண்ட அறிவு வடிவினர் (அறிவு தவிர வேறெதுவுமில்லாதவர்)
- ९६२. विज्ञानात्मा மரீரத்திற்குள் இருந்து விஷயங்களை அறியும் விஞ்ஞான வடிவினர்
- ९६३. विलासकृत् (அத்தகைய விஞ்ஞானங்களிலேயே) ஒளிர்பவர்

- **९६४. प्रियाप्रियस्पर्शहीनः** பிடித்தது பிடிக்காதது என்னும் உணர்வுகளால் பாதிக்கப்படாதவர்
- **९६५. अमृतः** அழிவில்லாதவர்
- ९६६. आकारादेहवान् ஆகாமத்தையே உடலாகக் (கொண்டு உள்ளுறைபவர்)
- **९६७. अभूमिः** நிலம் அல்லாதவர்
- **९६८. अजलः** நீர் அல்லாதவர்
- **९६९. अनिप्तः** நெருப்பு அல்லாதவர்
- ९७०. अवायुः வளி (காற்று) அல்லாதவர்
- ९७१. अनम्बरः வெளி (ஆகாயம்) அல்லாதவர்
- ९७२. अग्राह्यः (கர்ம இந்த்ரியங்களால்) பிடிக்க இயலாதவர்
- ९७३. अद्रेश्यकः (ஞான இந்த்ரியங்களால்) காண முடியாதவர்
- ९७४. अश्रोता (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) கேட்காதவர்
- ९७५. श्रोता (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) கேட்பவர்
- ९७६. कर्ता (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) செய்பவர்
- ९७७. अकर्तृकः (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) செய்யாதவர்
- ९७८. अगन्यः (உண்மையில்) மணமற்றவர்
- ९७९. अरसकः சுவையில்லாதவர்
- **९८०. अरूपः** உருவில்லதவர்
- **९८१. अस्पर्शः** தொட இயலாதவர்
- ९८२. अशब्दः ஒலியற்றவர்
- **९८३. राब्द्भाक्** (வேத) மப்தங்களை (தன்னைத் தெரிவிப்பவையாகக்) கொண்டவர்
- ९८४. मन्ता (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) நினைப்பவர்
- ९८५. अमन्ता (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) நினைக்காதவர்

- ९८६. अनुमन्ता (மனம் விஷயங்களை நினைக்கையில் அதற்குள் இருப்பதால்) அதனை ஒட்டி பார்ப்பவர்
- ९८७. बोद्धा (உலக நடப்பில் அனைத்தையும்) தீர்மானிப்பவர்
- ९८८. अबोद्धा (உண்மையில் எது ஒன்றையும்) தீர்மானிக்காதவர்
- ९८९. प्रबोधकृत् (ஆத்மாவை அறிய வேண்டும் என்ற) விழிப்பூட்டுபவர்
- ९९०. एकः (உண்மையில்) ஒன்றாக உள்ளவர்
- ९९१. अनेकः (உலக நடப்பில்) பலதாக உள்ளவர்
- ९९२. केवलात्मा (வெளி தொடர்பற்ற) தனி ஆத்மாவானவர்
- **९९३. सर्वः** எல்லாமும் ஆனவர்
- ९९४. संसारमोचनः സம்സாரத்தில் இருந்து விடுவிப்பவர்
- **९९५. नित्यशुद्धः** எப்போதும் சுத்தர் ???
- **९९६. नित्यबुद्धः** எப்போதும் நல்லறிவானவர் ??
- **९९७. नित्यमुक्तः** எப்போதும் முக்தர் ஆனவர் ?
- ९९८. निराश्रयः (தனக்கு) புகலிடம் (தேவை) இல்லாதவர்
- ९९९. हार्दाविद्यातम३छेत्ता ஹ்ருதயத்தில் உள்ள அவித்யை என்னும் இருளை வெட்டுபவர்
- १०००. भक्तहत्पद्मभास्करः பக்தர்களின் இதயத் தாமரையில் சூரியனானவர்

